हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026

11 राहुल गांधी का छात्रों की गूंज अभियान युवाओं के...

12 जयसिंह का इस्तीफा स्वीकार, 1 वोट से चुनाव...

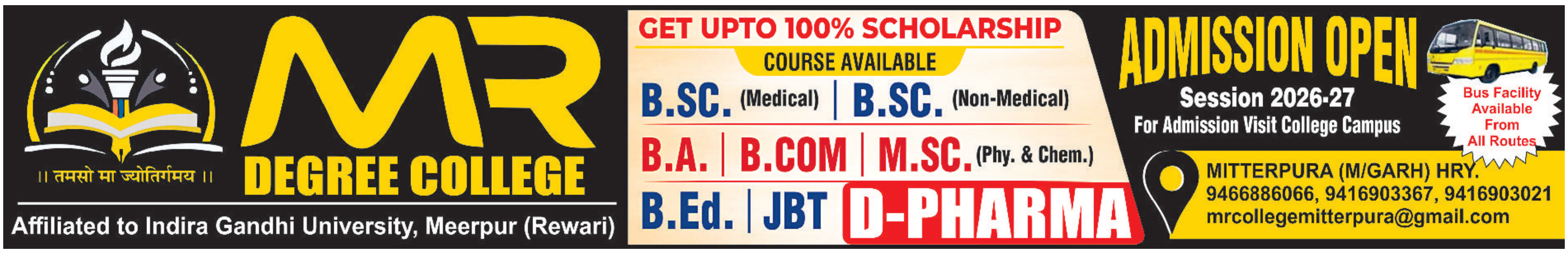

खबर संक्षेप

जुलाई के मध्य में रोहतक में होगी सेना की भर्ती

महेंद्रगढ़। चरखी दादरी सेना भर्ती कार्यालय के प्रवक्ता ने बताया कि वर्ष 2027 के लिए भारतीय सेना में भर्ती के लिए आयोजित ऑनलाइन कॉमन एंट्रेंस एग्जाम में शामिल हुए अभ्यर्थियों के लिए सीईई परीक्षा का परिणाम घोषित होने के उपरांत जोनल भर्ती कार्यालय अंबाला के अंतर्गत वर्ष की पहली सेना भर्ती रैली का आयोजन सेना भर्ती कार्यालय रोहतक द्वारा किया जाएगा। यह भर्ती रैली संभावित रूप से जुलाई माह के मध्य में राजीव गांधी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स रोहतक में आयोजित होगी।

कनीना में ई-रिक्शा से 4 बैटरियां चोरी, केस दर्ज

कनीना। वार्ड नंबर नौ में नहर के पास किराए पर रहने वाले बिजेंद्र कुमार, मूल निवासी ककराला ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उनके घर के बाहर खडी ई-रिक्शा से चार बैटरी अज्ञात चोर चोरी कर ले गए। चोरी की गई बैटरियों की कीमत लगभग 10 हजार रुपये बताई गई है। पीड़ित की शिकायत पर कार्रवाई करते हुए कनीना सिटी थाना पुलिस ने केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है।

चेलावास में खेत से बोरवेल के पाइप चोरी

कनीना। गांव चेलावास में खेत से बोरवेल के नए पाइप और लोहे की नलकी चोरी करने के आरोप में पुलिस ने केस दर्ज किया है। शिकायतकर्ता सिकंदर ने पुलिस को दी अपनी शिकायत में बताया है कि उन्होंने खेत में नया बोरवेल करवाया था। जहां से एक जुलाई को ट्यूबवेल के पास रखे छह नए पाइप और दो लोहे की नलकी चोरी हो गईं। पीड़ित ने गांव के ही दो व्यक्तियों कुलदीप राजेश व कुलदीप सतबीर पर चोरी का शक जताया है। कनीना पुलिस ने शिकायत पर केस दर्ज कर आरोपितों को काबू कर लिया है।

सोसायटी कार्यालय पर दो महीने में 4555 बैग पहुंचे, शनिवार तक पूरा स्टॉक समाप्त

खेप आते ही खत्म हो रही यूरिया, खरीफ सीजन पूरे रंग में, खाद की मांग चरम पर

बाजरे में भी बढ़ा रासायनिक खाद का इस्तेमाल

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

इन दिनों खरीफ सीजन पूरे रंग में है। इसके साथ ही जिले में यूरिया खाद की मांग भी अपने चरम पर पहुंच गई है। खेतों में बाजरा, कपास, ग्वार, मूंग सहित अन्य खरीफ फसलों की बढ़वार के इस महत्वपूर्ण दौर में किसानों को यूरिया की सबसे अधिक जरूरत महसूस हो रही है। यही कारण है कि नई अनाज मंडी स्थित कोऑपरेटिव सोसायटी में यूरिया की हर खेप कुछ ही दिनों में किसानों के बीच वितरित हो जा रही है। शनिवार तक सोसायटी में उपलब्ध पूरा स्टॉक समाप्त हो चुका था।

सरकारी दर पर खाद उपलब्ध होने से सुबह से ही किसान सोसायटी पहुंचने लगे हैं। महिला किसान भी बड़ी संख्या में खाद लेने के लिए पहुंच रही हैं। विभाग की ओर से वितरण व्यवस्था को सुव्यवस्थित रखने के लिए प्रत्येक किसान को अधिकतम पांच बैग ही दिए जा रहे हैं, ताकि अधिक से अधिक किसानों को समय पर खाद उपलब्ध हो सके। सोसायटी में 45 किलोग्राम वजन वाले एक बैग की कीमत 266.50 रुपये निर्धारित है।

पिछले करीब दो महीनों के आंकड़े भी जिले में यूरिया की बढ़ती खपत की कहानी बयां कर रहे हैं। गत 11 मई 2026 से अब तक कोऑपरेटिव सोसायटी को कुल 4555 बैग यूरिया प्राप्त हो चुका है। सबसे पहले 11 मई को 560 बैग पहुंचे, इसके बाद 25 मई को 555 बैग, 8 जून को 600 बैग और 27 जून को 560 बैग की खेप आई। मांग लगातार बढ़ती देख 29 जून को 1120 बैग भेजे गए, लेकिन यह स्टॉक भी कुछ ही दिनों में किसानों के बीच वितरित हो गया।

इसके बाद एक जुलाई को 1160 बैग की नई खेप पहुंची। पहले दिन 517 बैग, दूसरे दिन 582 बैग वितरित किए गए, जबकि शेष स्टॉक शनिवार को समाप्त हो गया। फिलहाल सोसायटी में यूरिया का कोई स्टॉक उपलब्ध नहीं है।

नारनौल। नई अनाज मंडी से यूरिया खरीदने पहुंचे किसान। फोटो : हरिभूमि

यह बोले सेल्समैन

सोसायटी में यूरिया का वितरण पूरी तरह निर्धारित नियमों के अनुसार किया जा रहा है। केवल 'मेरी फसल मेरा ब्यौरा' पोर्टल पर पंजीकृत किसानों को ही खाद उपलब्ध कराई जा रही है। प्रत्येक किसान को अधिकतम पांच बैग दिए जा रहे हैं, ताकि सभी जरूरतमंद किसानों तक समय पर यूरिया पहुंच सके। फिलहाल उपलब्ध पूरा स्टॉक वितरित हो चुका है। नई खेप प्राप्त होते ही किसानों को फिर से खाद उपलब्ध कराई जाएगी। -अमित यादव, सेल्समैन, कोऑपरेटिव सोसायटी, नई अनाज मंडी, नारनौल

दो महीने में कब-कब पहुंचा यूरिया

तिथि	प्राप्त बैग
11 मई	560
25 मई	555
8 जून	600
27 जून	560
29 जून	1120
1 जुलाई	1160
कुल प्राप्त	4555 बैग
वर्तमान स्टॉक	शून्य

एक नजर में

- 45 किलोग्राम का एक बैग
- 266.50 रुपये सरकारी निर्धारित कीमत
- अधिकतम 5 बैग प्रति किसान
- 'मेरी फसल मेरा ब्यौरा' पोर्टल पर पंजीकृत किसानों को ही वितरण
- खरीफ सीजन में लगातार बढ़ रही यूरिया की मांग, नई खेप का इंतजार

कर्मचारी यूनियन की सिंचाई मंत्री से कल होगी वार्ता

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

हरियाणा गवर्नमेंट पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल वर्कर्स यूनियन (रजि. नं. 41) संबंधित सर्व कर्मचारी संघ ने सिंचाई मंत्री के कैंप कार्यालय के 4 जुलाई के प्रस्तावित घेराव और प्रदर्शन को स्थगित करते हुए 6 जुलाई को वार्ता करने का निर्णय लिया है। यूनियन का कहना है कि सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी ने कर्मचारियों की मांगों पर चर्चा के लिए संगठन को लिखित रूप से 6 जुलाई को वार्ता के लिए आमंत्रित किया है। यूनियन के जिला सचिव विजेंद्र शर्मा ने बताया कि कर्मचारियों की समस्याओं के समाधान के लिए संगठन लगातार संघर्ष कर रहा है। उन्होंने महेंद्रगढ़ जिले की सभी इकाइयों का आंदोलन की तैयारियों और एकजुटता के लिए आभार जताया। कर्मचारियों के संघर्ष और आंदोलन के दबाव को देखते हुए सिंचाई मंत्री ने संगठन को लिखित पत्र भेजकर 6 जुलाई को बातचीत के लिए बुलाया है। पहले 4 जुलाई को भिवानी स्थित सिंचाई मंत्री के कैंप कार्यालय का घेराव और प्रदर्शन प्रस्तावित था, लेकिन वार्ता के निमंत्रण के बाद इसे फिलहाल रद्द कर दिया गया। यदि 6 जुलाई को होने वाली बैठक में कर्मचारियों की जायज मांगों पर संतोषजनक समाधान नहीं निकलता है तो राज्य कमेटी के आह्वान पर आगामी आंदोलन की रणनीति तय की जाएगी।

मंडी अटेली। कपिल की मौत मामले को पंचायत करते ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

पुलिस भर्ती के दौरान मारे गए युवक के समर्थन में ग्रामीणों ने की पंचायत

मंडी अटेली। हरियाणा पुलिस भर्ती के तहत पंचकूला में आयोजित फिजिकल टेस्ट के दौरान 27 वर्षीय युवक कपिल की दौड़ते समय अचानक तबीयत बिगड़ने के बाद मौत हो जाने से क्षेत्र में शोक और आक्रोश का माहौल है। अटेली क्षेत्र के गांव सैदपुर निवासी कपिल की असामयिक मौत ने जहां परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया है, वहीं ग्रामीणों ने इस घटना को लेकर प्रशासनिक व्यवस्था पर सवाल उठाए हैं। फिजिकल टेस्ट के दौरान दौड़ते समय कपिल की अचानक हालत बिगड़ गई और वह बेहोश होकर गिर पड़ा। परिजनों और ग्रामीणों का आरोप है कि मौके पर पर्याप्त और समय पर उचित चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध नहीं थी। उनका कहना है कि यदि तुरंत बेहतर चिकित्सा सहायता मिल जाती तो संभवत कपिल की जान बचाई जा सकती थी। घटना के बाद गांव सैदपुर में सरपंच विकास यादव की अध्यक्षता में ग्रामीणों की एक पंचायत आयोजित की गई, जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। पंचायत में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि कपिल के परिवार को उचित आर्थिक मुआवजा दिया जाए और उसकी विधवा पत्नी को सरकारी नौकरी प्रदान की जाए, ताकि परिवार को इस कठिन समय में सहारा मिल सके। सरपंच विकास यादव ने कहा कि यह केवल एक हादसा नहीं, बल्कि व्यवस्था की लापरवाही का परिणाम प्रतीत होता है। उन्होंने मांग की कि पूरे मामले की निष्पक्ष और गहन जांच कर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। साथ ही भविष्य में इस तरह की घटनाओं से बचने के लिए भर्ती प्रक्रियाओं में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं सुनिश्चित की जाएं। ग्रामीणों ने यह भी निर्णय लिया कि रविवार सायं मंडी अटेली की पुरानी मंडी से झंडा चौक तक कैंडल मार्च निकाला जाए, जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल होकर कपिल को श्रद्धांजलि देंगे और न्याय की मांग करेंगे।

एचटेट : कड़ी सुरक्षा में 3458 ने दी परीक्षा

- आज 6854 टीजीटी व 1921 पीआरटी के लिए देंगे परीक्षा

महेंद्रगढ़। परीक्षा केंद्र के बाहर अभ्यार्थी का दस्तावेज जांचती पुलिस कर्मी। फोटो : हरिभूमि

- कड़ी सुरक्षा के बीच शांतिपूर्ण संपन्न हुई एचटेट की पहली परीक्षा
- 4018 में से 3458 अभ्यर्थी हुए शामिल, डीसी-एसपी ने केंद्रों का किया औचक निरीक्षण

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

जिले में हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा (एचटेट)-2026 का पहला दिन शनिवार को कड़ी सुरक्षा, प्रशासनिक निगरानी और सुव्यवस्थित व्यवस्थाओं के बीच शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। पहले दिन केवल लेवल-3 (पीजीटी) की परीक्षा आयोजित की गई, जिसके लिए महेंद्रगढ़ उपमंडल में आठ परीक्षा केंद्र बनाए गए थे। उपायुक्त अनुपमा अंजली, पुलिस अधीक्षक दीपक कुमार तथा एसडीएम योगेश सैनी एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने विभिन्न परीक्षा केंद्रों का औचक निरीक्षण कर सुरक्षा एवं अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया। परीक्षार्थियों ने भी जिला प्रशासन द्वारा किए गए प्रबंधों की सराहना की। एचटेट की शाम की शिफ्ट में कुल 4018 अभ्यर्थी पंजीकृत थे, जिनमें से 3458 अभ्यर्थी परीक्षा में शामिल हुए, जबकि 560 अनुपस्थित रहे। परीक्षा निर्धारित समय पर शुरू हुई और बिना किसी व्यवधान के शांतिपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। परीक्षा समाप्त होने के बाद अभ्यर्थी व्यवस्थित ढंग से केंद्रों से बाहर निकले। निष्पक्ष एवं पारदर्शी परीक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी परीक्षा केंद्रों पर व्यापक सुरक्षा व्यवस्था की गई थी। केंद्रों पर पर्याप्त पुलिस बल तैनात रहा, जबकि ड्यूटी मजिस्ट्रेट, केंद्र अधीक्षक, पर्यवेक्षक तथा उड़नदस्ता टीमों ने लगातार निरीक्षण किया। किसी भी केंद्र से नकल, अनुचित साधनों के प्रयोग अथवा कानून-व्यवस्था से जुड़ी कोई शिकायत सामने नहीं आई।

परीक्षा केंद्रों में प्रवेश से पहले अभ्यर्थियों की पहचान पत्र, प्रवेश पत्र और बायोमेट्रिक सत्यापन के बाद ही एंट्री दी गई। मोबाइल फोन, स्मार्ट वॉच, ब्लूटूथ डिवाइस सहित सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर पूरी तरह प्रतिबंध रहा। सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से भी परीक्षा गतिविधियों पर लगातार निगरानी रखी गई।

भीषण गर्मी और उमस के बावजूद अभ्यर्थियों का उत्साह देखने लायक रहा। पहले दिन लेवल-3 की परीक्षा राजकीय कॉलेज महेंद्रगढ़, हैप्पी स्कूल, आरपीएस स्कूल खातोद, बाबा नारायण दास स्कूल खातोदड़ा, विजय इंटरनेशनल स्कूल बलाना, अरावली इंटरनेशनल स्कूल माजरा खुर्द, शरबती स्कूल तथा उदय नर्सिंग कॉलेज पाली सहित आठ केंद्रों पर आयोजित हुई।

ये अधिकारी लेते रहे जायजा

निरीक्षण के दौरान डीसी अनुपमा अंजली, एसपी दीपक कुमार, एसडीएम एवं नोडल अधिकारी योगेश सैनी, तहसीलदार अजय कुमार, सीईओ निर्मला नारग, जिला शिक्षा अधिकारी विश्वेश्वर कौशिक सहित अन्य अधिकारियों ने परीक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। अधिकारियों ने बताया कि प्रशासन, पुलिस और शिक्षा विभाग के बेहतर समन्वय के कारण परीक्षा पूरी तरह निष्पक्ष और शांतिपूर्ण रही।

आज 14 जगह पर होगी परीक्षा

रविवार को जिले के महेंद्रगढ़ और नारनौल दोनों उपमंडलों में एचटेट की परीक्षा आयोजित होगी। जिले में कुल 14 जगह पर यह परीक्षा करवाई जाएगी। जिनमें महेंद्रगढ़ में 10 और नारनौल में चार जगह शामिल हैं। सुबह की शिफ्ट में लेवल-2 (टीजीटी) परीक्षा में 6854 तथा शाम की शिफ्ट में लेवल-1 (पीआरटी) के लिए 1921 अभ्यार्थी परीक्षा होगी। अभ्यर्थियों की सुविधा के लिए रोडवेज की विशेष बसों की व्यवस्था की गई है तथा उड़नदस्ता टीमें दूसरे दिन भी पूरी तरह सक्रिय रहेंगी।

जिला बार एसोसिएशन के प्रधान ने नारनौल में लेबर कोर्ट स्थापित करने की रखी मांग

सांसद बोले...स्थान उपलब्ध करवाएं, लेबर कोर्ट स्थापित का गंभीरता से करेंगे प्रयास

सांसद ने न्यू बार रूम एवं लाइब्रेरी के लिए एयर कंडीशनर के लिए 21 लाख की सहायता देने की घोषणा की

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

जिला बार एसोसिएशन के न्यू बार रूम में सांसद चौधरी धर्मवीर सिंह ने अधिवक्ताओं से सौजन्य भेंट एवं संवाद किया। उनके साथ भाजपा जिला अध्क्ष यतेंद्र राव भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में जिला बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों सहित बड़ी संख्या में अधिवक्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस दौरान जिला बार एसोसिएशन के प्रधान की मांग पर सांसद ने गंभीरता दिखाते हुए कहा कि स्थान उपलब्ध करवाएं लेबर कोर्ट स्थापित करवाने के लिए वह गंभीरता से प्रयास करेंगे। साथ ही सांसद ने जिला बार एसोसिएशन को न्यू बार रूम एवं लाइब्रेरी के लिए एयर कंडीशनर के लिए 21 लाख की सहायता राशि देने की घोषणा भी की।

नारनौल। सांसद चौधरी धर्मवीर सिंह का स्वागत करते जिला बार एसोसिएशन। फोटो : हरिभूमि

कार्यक्रम का शुभारंभ जिला बार एसोसिएशन के प्रधान संतोख सिंह यादव एडवोकेट की ओर से सांसद का सम्मानपूर्वक स्वागत करने के साथ हुआ। मंच संचालन जिला बार एसोसिएशन के सचिव प्रदीप यादव एडवोकेट ने किया। मंच पर जिला बार एसोसिएशन की उप प्रधान विकास सांगवान एडवोकेट, संयुक्त सचिव चंद्र देव यादव एडवोकेट, कोषाध्यक्ष सुगन सिंह एडवोकेट, लाइब्रेरियन परमिंदर यादव एडवोकेट व ऑडिटर कार्तिक यादव एडवोकेट भी उपस्थित रहे। प्रधान संतोख सिंह यादव ने कहा कि जिला बार एसोसिएशन लगातार अधिवक्ताओं के लिए आधुनिक एवं बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रयासरत है। प्रधान ने नारनौल में लेबर कोर्ट की स्थापना की मांग भी प्रमुखता से उठाई। यदि सरकार लेबर कोर्ट स्थापित करने का निर्णय लेती है तो जिला बार एसोसिएशन इसके लिए आवश्यक स्थान उपलब्ध कराने को पूर्णतः तैयार है।

प्रधान की मांग पर सांसद भी दिखे गंभीर

सांसद धर्मवीर सिंह ने जिला बार एसोसिएशन की मांगों को अत्यंत गंभीरता से स्वीकार करते हुए न्यू बार रूम एवं लाइब्रेरी के लिए अपनी सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास निधि से 11 लाख की राशि तत्काल स्वीकृत करने की घोषणा की। साथ ही उन्होंने अगले वर्ष 10 लाख की अतिरिक्त राशि उपलब्ध कराने का भी आश्वासन दिया। इस प्रकार उन्होंने जिला बार एसोसिएशन को कुल 21 लाख की आर्थिक सहायता प्रदान करने की घोषणा की। लेबर कोर्ट की स्थापना के संबंध में सांसद ने कहा कि यदि जिला बार एसोसिएशन आवश्यक स्थान उपलब्ध कराने के लिए तैयार है तो वे नारनौल में लेबर कोर्ट स्थापित करवाने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकार के समक्ष पूरी गंभीरता से प्रयास करेंगे।

■ 60 हजार बचाने के चक्कर में गंवा सकते हैं 82 लाख रुपये

■ कंपाउंडिंग बताता है कि निवेश में समय ही सबसे बड़ी पूंजी

■ जल्दी शुरुआत करने वालों को मिलता है सबसे बड़ा फायदा

एसआईपी में सिर्फ 1 वर्ष की देरी पड़ सकती है भारी

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि जितना अधिक पैसा निवेश करेंगे, उतना बड़ा फंड तैयार होगा। यह बात सही है, लेकिन पूरी सच्चाई नहीं। निवेश विशेषज्ञों का कहना है कि निवेश की रकम से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है निवेश की शुरुआत का समय। यदि कोई व्यक्ति एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक साल की भी देरी करता है तो उसे भविष्य में लाखों रुपये का नुकसान उठाना पड़ सकता है। वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार कंपाउंडिंग की ताकत समय के साथ सबसे अधिक काम करती है। यही वजह है कि एसआईपी की पहली किस्त की कीमत आखिरी किस्त से कई गुना ज्यादा होती है। एक साल की देरी केवल 12 किस्तों का नुकसान नहीं कराती, बल्कि उन किस्तों पर मिलने वाले वर्षों के रिटर्न से भी निवेशक वंचित रह जाता है।

क्यों सबसे अहम है पहली एसआई

कंपाउंडिंग का अर्थ है कि निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे चलकर रिटर्न कमाने लगता है। यानी आपका पैसा केवल बढ़ता नहीं, बल्कि बढ़ा हुआ पैसा भी कमाई करता है। यदि कोई निवेशक 30 वर्ष तक लगातार एसआईपी करता है, तो पहले साल जमा की गई रकम को पूरे 30 वर्षों तक बढ़ने का मौका मिलता है। वहीं अंतिम वर्ष में जमा की गई राशि को केवल कुछ महीनों का ही समय मिलता है। यही कारण है कि शुरुआती निवेश की ताकत सबसे अधिक होती है। विशेषज्ञ इसे निवेश की दुनिया का सबसे बड़ा जादू मानते हैं। जितनी जल्दी शुरुआत होगी, कंपाउंडिंग उतना ही अधिक काम करेगी।

एक साल की देरी का बड़ा नुकसान

मान लीजिए कोई निवेशक हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी करता है और उसे औसतन 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न मिलता है। यदि वह लगातार 30 वर्षों तक निवेश करता है तो कुल निवेश राशि 18 लाख रुपये होगी। इस अवधि के अंत में उसका फंड लगभग 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है। लेकिन यदि वही निवेशक एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक वर्ष की देरी कर देता है और केवल 29 वर्ष निवेश करता है, तो उसका अंतिम फंड घटकर लगभग 1.56 करोड़ रुपये रह जाएगा। यानी केवल 60 हजार रुपये (12 किस्तें) का निवेश टालने की कीमत लगभग 20.43 लाख रुपये हो सकती है। यह उदाहरण बताता है कि निवेश में सबसे बड़ा नुकसान बाजार की गिरावट नहीं, बल्कि समय गंवाने से होता है।

जितनी बड़ी एसआई, उतना नुकसान

एक साल की देरी का असर निवेश राशि बढ़ने के साथ और भी ज्यादा दिखाई देता है। यदि कोई निवेशक हर महीने 2,000 रुपये की एसआईपी करता है तो एक साल की देरी से लगभग 8.17 लाख रुपये का संभावित नुकसान हो सकता है। 10,000 रुपये मासिक एसआईपी करने वाले निवेशक के लिए यही नुकसान बढ़कर लगभग 40.87 लाख रुपये तक पहुंच सकता है। वहीं यदि मासिक एसआईपी 20,000 रुपये की है तो केवल एक साल की देरी भविष्य में करीब 82 लाख रुपये के संभावित फंड को कम कर सकती है। यही कारण है कि निवेश विशेषज्ञ हमेशा कहते हैं कि ₹सही समय का इंतजार मत कीजिए, समय को अपने पक्ष में कीजिए।

आखिर में रफ्तार पकड़ती है कंपाउंडिंग

एसआईपी का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि शुरुआती वर्षों में निवेश की रफ्तार धीमी लगती है, लेकिन बाद के वर्षों में वही निवेश तेजी से बढ़ने लगता है।

उदाहरण के तौर पर 5,000 रुपये की मासिक एसआईपी में

- 10 वर्ष बाद कुल निवेश लगभग 6 लाख रुपये होगा और फंड करीब 11.62 लाख रुपये बन सकता है।
- 20 वर्ष बाद कुल निवेश 12 लाख रुपये होगा, लेकिन फंड करीब 50 लाख रुपये तक पहुंच सकता है।
- 30 वर्ष पूरे होने पर कुल निवेश 18 लाख रुपये रहेगा, जबकि फंड बढ़कर लगभग 1.76 करोड़ रुपये हो जाएगा।
- यानी अंतिम दस वर्षों में केवल 6 लाख रुपये का अतिरिक्त निवेश पूरे फंड को 50 लाख रुपये से बढ़ाकर 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंचा देता है। यही कंपाउंडिंग की असली ताकत है।

शुरुआत में देरी हो गई तो क्या करें?

यदि किसी कारणवश एसआईपी शुरू करने में देरी हो गई है तो भी नुकसान की भरपाई की जा सकती है।

विशेषज्ञों के अनुसार यदि आपने पहला साल गंवा दिया है तो शेष अवधि में अपनी मासिक एसआईपी थोड़ी बढ़ाकर इस अंतर को काफी हद तक पूरा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि आपकी योजना 5,000 रुपये मासिक एसआईपी की थी और एक साल की देरी हो गई, तो अगले 29 वर्षों तक लगभग 5,655 रुपये प्रति माह निवेश करके उस संभावित अंतर को काफी हद तक भरा जा सकता है। यानी हर महीने केवल 655 रुपये अतिरिक्त निवेश भविष्य में लाखों रुपये का अंतर पैदा कर सकता है।

छोटी एसआईपी भी बनेगी बड़ा फंड

- कई लोग सोचते हैं कि निवेश शुरू करने के लिए बड़ी रकम होना जरूरी है, जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है।
- वित्तीय सलाहकारों का कहना है कि यदि फिलहाल बड़ी राशि उपलब्ध नहीं है तो 500 रुपये, 1,000 रुपये या 2,000 रुपये से भी एसआईपी शुरू की जा सकती है। जैसे-जैसे आय बढ़े, वैसे-वैसे एसआईपी की राशि भी बढ़ाई जा सकती है।
- नियमित निवेश और लंबी अवधि का अनुशासन ही बड़ा कोष तैयार करने की सबसे प्रभावी रणनीति है।

समय ही सबसे बड़ा निवेश है

विशेषज्ञों का मानना है कि निवेश की दुनिया में सबसे मूल्यवान चीज पैसा नहीं, बल्कि समय है। बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे, लेकिन लंबे समय तक निवेश बनाए रखने वाले निवेशकों को कंपाउंडिंग का सबसे बड़ा लाभ मिलता है। यदि आप भविष्य में आर्थिक रूप से मजबूत बनना चाहते हैं तो निवेश की शुरुआत टालने के बजाय जितनी जल्दी संभव हो, उतनी जल्दी एसआईपी शुरू करें। छोटी-सी शुरुआत भी समय के साथ करोड़ों रुपये का फंड तैयार कर सकती है। इसलिए निवेश का सबसे अच्छा समय आज है, क्योंकि एक साल की देरी भविष्य में लाखों नहीं, बल्कि बड़े निवेशकों के लिए करोड़ों रुपये तक का अंतर पैदा कर सकती है।

पीपीएफ या म्यूचुअल फंड पर लें लोन?

- इमरजेंसी में कौन सा विकल्प है बेहतर
- अचानक पैसों की जरूरत पड़ने पर निवेश तोड़े बिना मिल सकती रकम
- दोनों विकल्पों के फायदे, नुकसान और किसके लिए कौन बेहतर

बिजनेस डेस्क

अचानक मेडिकल इमरजेंसी, बिजनेस में नकदी की जरूरत या किसी अन्य जरूरी खर्च के लिए अक्सर लोग अपने निवेश तोड़ देते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेश को समय से पहले भुनाने के बजाय उसके बदले लोन लेना कई बार अधिक फायदेमंद साबित होता है। पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) और म्यूचुअल फंड, दोनों पर लोन लेने की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन दोनों की शर्तें, ब्याज दरें और लोन की सीमा अलग-अलग हैं। ऐसे में जरूरत और निवेश के आधार पर सही विकल्प चुनना जरूरी है।

पीपीएफ पर लोनः कम ब्याज, लेकिन सीमित सुविधा

पीपीएफ पर लोन केवल एक निश्चित अवधि के दौरान ही लिया जा सकता है। खाता खुलने वाले वित्तीय वर्ष के तीसरे साल से लेकर छठे वित्तीय वर्ष तक ही यह सुविधा मिलती है। यदि पहले लिया गया लोन पूरी तरह चुका दिया गया हो, तभी अगला लोन लिया जा सकता है। लोन की अधिकतम राशि आवेदन से दो वित्तीय वर्ष पहले के खाते में उपलब्ध बैलेंस के केवल 25 प्रतिशत तक सीमित होती है। चूंकि पीपीएफ सरकार समर्थित बचत योजना है, इसलिए इस पर ब्याज भी कम लगता है। वर्तमान में पीपीएफ पर 7.1 प्रतिशत ब्याज मिलता है और लोन की ब्याज दर इससे केवल 1 प्रतिशत अधिक यानी लगभग 8.1 प्रतिशत है। उदाहरण के तौर पर यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये का लोन चाहिए तो उसके पीपीएफ खाते में लगभग 16 लाख रुपये का बैलेंस होना आवश्यक होगा, क्योंकि केवल 25 प्रतिशत राशि ही लोन के रूप में मिल सकती है।

म्यूचुअल फंड पर लोन : ज्यादा रकम और अधिक लचीलापन

म्यूचुअल फंड के बदले लोन निवेशकों के लिए अधिक लचीला विकल्प माना जाता है। यह सुविधा फिजिकल और डीमैट दोनों रूपों में रखी गई म्यूचुअल फंड यूनिट्स पर उपलब्ध है। इसका लाभ व्यक्तिगत निवेशकों के अलावा एचयूएफ, कंपनियां, एलएलपी, ट्रस्ट और साझेदारी फर्में भी ले सकती हैं। इक्विटी, डेट, हाइब्रिड और लिक्विड फंड सभी पर लोन मिल सकता है, हालांकि लोन की सीमा फंड के प्रकार पर निर्भर करती है। डेट और लिक्विड फंड पर आमतौर पर 70 से 80 प्रतिशत तक लोन मिल जाता है, जबकि इक्विटी फंड पर यह सीमा लगभग 50 प्रतिशत रहती है। यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये की जरूरत है तो करीब आठ लाख रुपये के म्यूचुअल फंड निवेश के आधार पर यह राशि मिल सकती है। सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक की यूनिट्स बिकती नहीं हैं और वे बाजार में निवेशित बनी रहती हैं, जिससे लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण जारी रहता है।

ब्याज और जोखिम में बड़ा अंतर

म्यूचुअल फंड पर लोन की ब्याज दर आमतौर पर 9 से 12 प्रतिशत के बीच होती है। कई बैंक और वित्तीय संस्थान इसे ओवरड्राफ्ट सुविधा के रूप में देते हैं, जिसमें केवल इस्तेमाल की गई राशि पर ही ब्याज देना पड़ता है। हालांकि इसमें एक जोखिम भी है। यदि बाजार गिरता है और म्यूचुअल फंड की नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) कम हो जाती है, तो बैंक अतिरिक्त सिक्योरिटी या आंशिक भुगतान की मांग कर सकता है। ऐसा नहीं करने पर गिरवी रखी गई यूनिट्स बेची भी जा सकती हैं।

किसके लिए कौन सा विकल्प बेहतर

वेतनभोगी कर्मचारियों के लिए, जो नियमित एसआईपी करते हैं और अच्छा म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो बना चुके हैं, म्यूचुअल फंड पर लोन बेहतर विकल्प माना जाता है। इससे निवेश टूटता नहीं और कंपाउंडिंग का लाभ भी जारी रहता है। स्वरोजगार या व्यवसाय करने वालों के लिए भी म्यूचुअल फंड पर लोन अधिक उपयोगी है, क्योंकि इसमें बड़ी राशि अपेक्षाकृत जल्दी मिल सकती है।

एसआईएफ की बढ़ती लोकप्रियता से लंपसम निवेश को मिल रही है चुनौती

10 लाख की न्यूनतम निवेश सीमा के बावजूद एसआईएफ की ओर बढ़ा रुझान

जानकारी
बिजनेस डेस्क

विशेषज्ञों का कहना है कि पहले लॉन्ग-शॉर्ट निवेश रणनीति का लाभ केवल कैटेगरी-III अल्टरनेटिव इन्वेस्टमेंट फंड (एआईएफ) के माध्यम से ही मिल पाता था। लेकिन एआईएफ में निवेश की न्यूनतम सीमा एक करोड़ रुपये होती है, जो अधिकांश निवेशकों की पहुंच से बाहर है। इसके विपरीत एसआईएफ में केवल 10 लाख रुपये से निवेश संभव है। इससे संपन्न निवेशकों को कम पूंजी में वही निवेश रणनीति अपनाने का अवसर मिल रहा है। यही कारण है कि बड़ी संख्या में एचएनआई निवेशक अब एसआईएफ को अपनाने लगे हैं।

म्यूचुअल फंड उद्योग में लंपसम निवेशकों के लिए एक नया विकल्प तेजी से उभर रहा है। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) की बढ़ती लोकप्रियता अब पारंपरिक इक्विटी म्यूचुअल फंडों के लंपसम निवेश को चुनौती देती दिखाई दे रही है। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि हाल के महीनों में इक्विटी म्यूचुअल फंडों में लंपसम निवेश घटने के पीछे एसआईएफ की बढ़ती स्वीकार्यता भी एक अहम वजह हो सकती है। पिछले महीने इक्विटी म्यूचुअल फंडों में शुद्ध निवेश (नेट इनफ्लो) में करीब 40 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई, जबकि दूसरी ओर एसआईपी (एसआईपी) निवेश लगातार मजबूत बना रहा। इससे यह संकेत मिला कि छोटे निवेशक नियमित निवेश जारी रखे हुए हैं, जबकि बड़े निवेशक अब नए विकल्पों की तलाश कर रहे हैं।

सात माह में सात गुना बढ़ा एयूएम

पिछले वर्ष शुरू किए गए स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड्स ने बेहद कम समय में निवेशकों का भरोसा जीत लिया है। अक्टूबर 2025 में इनका एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) लगभग 2,010 करोड़ रुपये था, जो मई 2026 तक बढ़कर 13,814 करोड़ रुपये के करीब पहुंच गया। यानी महज सात महीनों में इनका आकार लगभग सात गुना बढ़ गया। हालांकि एसआईएफ में निवेश के लिए न्यूनतम 10 लाख रुपये की सीमा तय की गई है, फिर भी हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल (एचएनआई) निवेशकों में इसका आकर्षण लगातार बढ़ रहा है।

हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम पसंद

एसआईएफ के भीतर सबसे अधिक लोकप्रियता हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम को मिली है। मई 2026 तक इस श्रेणी में करीब 9,709 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो कुल एसआईएफ एसेट्स का लगभग 70 प्रतिशत है। इन योजनाओं में प्रति फोलियो औसत निवेश भी सबसे अधिक रहा। हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में औसत निवेश करीब 33.86 लाख रुपये प्रति फोलियो दर्ज किया गया। इसके मुकाबले इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में यह आंकड़ा 15.64 लाख रुपये और इक्विटी एक्स-टॉप-100 लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में 12.77 लाख रुपये रहा। विशेषज्ञों का कहना है कि यह आंकड़ा बताता है कि संपन्न निवेशक इस नई श्रेणी पर तेजी से भरोसा जता रहे हैं।

क्यों बढ़ रही है एसआईएफ मांग

बाजार जानकारों के अनुसार एसआईएफ की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह निवेशकों को बेहतर जोखिम-समायोजित रिटर्न देने की कोशिश करता है। विशेष रूप से हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट रणनीति बाजार में गिरावट के दौरान भी नुकसान को सीमित रखने का प्रयास करती है। हालिया बाजार सुधार के दौरान इन योजनाओं ने सकारात्मक रिटर्न देकर निवेशकों का भरोसा और मजबूत किया है। यही वजह है कि कई निवेशक अब पारंपरिक लंपसम इक्विटी निवेश की जगह एसआईएफ को प्राथमिकता दे रहे हैं।

म्यूचुअल फंडों पर पड़ेगा असर?

विशेषज्ञों का मानना है कि अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि एसआईएफ पारंपरिक म्यूचुअल फंडों का स्थान ले लेंगे। फिलहाल इसका प्रभाव मुख्य रूप से बड़े लंपसम निवेशकों तक सीमित है। एसआईपी निवेश में किसी प्रकार की कमजोरी देखने को नहीं मिली है। इससे स्पष्ट है कि खुदरा निवेशक अभी भी नियमित निवेश के लिए पारंपरिक म्यूचुअल फंडों पर भरोसा बनाए हुए हैं। हालांकि यदि एसआईएफ का प्रदर्शन लगातार बेहतर रहता है तो आने वाले वर्षों में बड़े निवेशकों का एक हिस्सा इस श्रेणी की ओर शिफ्ट हो सकता है।

किन निवेशकों के लिए बेहतर है एसआईएफ

विशेषज्ञों के अनुसार एसआईएफ उन निवेशकों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिनके पास पहले से बड़ा निवेश पोर्टफोलियो है और जो बाजार की अस्थिरता के बीच बेहतर जोखिम प्रबंधन चाहते हैं। विशेष रूप से ऐसे निवेशक जो एकमुश्त बड़ी राशि निवेश करते हैं और केवल इक्विटी पर निर्भर नहीं रहना चाहते, उनके लिए यह एक बेहतर विकल्प बन सकता है। इसके अलावा फिक्स्ड इनकम निवेशक, जो सीमित जोखिम के साथ अपेक्षाकृत बेहतर रिटर्न चाहते हैं, वे भी भविष्य में इस श्रेणी की ओर आकर्षित हो सकते हैं।

अभी भी कई चुनौतियां बाकी

हालांकि विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि एसआईएफ को व्यापक स्तर पर लोकप्रिय होने में अभी समय लगेगा। निवेशकों में जागरूकता बढ़ाने, वितरकों को प्रशिक्षित करने और लंबी अवधि का प्रदर्शन रिकॉर्ड तैयार होने के बाद ही यह श्रेणी बड़े पैमाने पर स्वीकार की जाएगी। निवेशकों के लिए यह भी जरूरी होगा कि वे केवल शुरुआती प्रदर्शन देखकर निवेश न करें, बल्कि फंड की रणनीति, जोखिम, शुल्क और अपने वित्तीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लें।

लंबी अवधि में बदल सकता है निवेश का परिदृश्य

वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय निवेश उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है। जैसे-जैसे निवेशकों की समझ बढ़ेगी, वे पारंपरिक इक्विटी और डेट फंडों से आगे बढ़कर नई निवेश रणनीतियों को भी अपनाएंगे। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड इसी बदलाव का संकेत हैं। यदि इनका प्रदर्शन स्थिर और बेहतर बना रहता है तो आने वाले वर्षों में यह हाई नेटवर्थ निवेशकों के पोर्टफोलियो का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं। हालांकि खुदरा निवेशकों के लिए एसआईपी आधारित म्यूचुअल फंड अभी भी सबसे सरल, अनुशासित और प्रभावी निवेश विकल्प बने हुए हैं।

---

20 साल की एसआईपी में सिर्फ पांच फंड ही बने असली 'वेल्थ क्रिएटर'

बिजनेस डेस्क। म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले अधिकांश निवेशकों का सपना होता है कि उन्हें लंबे समय तक लगातार बेहतर रिटर्न मिले। हालांकि, ऐसा करने वाले फंड बहुत कम हैं। करीब 600 सक्रिय इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के विश्लेषण में केवल पांच ऐसी योजनाएं सामने आई हैं, जिन्होंने 3, 5, 10, 15 और 20 वर्ष जैसी सभी प्रमुख निवेश अवधियों में 15 प्रतिशत से अधिक सालाना एसआईपी रिटर्न दिया है। यह विश्लेषण वैल्यू रिसर्च के 29 जून 2026 तक के आंकड़ों पर आधारित है। सबसे खास बात यह है कि इस सूची में कोई भी फ्लेक्सी-कैप या लार्जकैप फंड शामिल नहीं है। दो मिडकैप, दो हेल्थकेयर और एक इंफ्रास्ट्रक्चर थीम आधारित फंड ने निवेशकों को लंबी अवधि में शानदार संपत्ति बनाने का अवसर दिया। यह दर्शाता है कि मजबूत सेक्टरों में लंबे समय तक धैर्य के साथ निवेश करने वाले निवेशकों को बेहतरीन रिटर्न मिला।

ये हैं पांच सबसे सफल एसआईपी फंड

- इस सूची में एचएसबीसी मिडकैप फंड (रेगुलर) पहले स्थान पर है। इस फंड ने 3 वर्ष में 20.05%, 5 वर्ष में 21.46%, 10 वर्ष में 18.39%, 15 वर्ष में 18.96% और 20 वर्ष में 17.70% का वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया। निवेशक ने 20 वर्षों तक हर महीने 10,000 की एसआईपी की होती, तो उसका निवेश बढ़कर 1.86 करोड़ हो जाता।
- दूसरे स्थान पर एसबीआई हेल्थकेयर ऑपर्च्युनिटी फंड (रेगूलर) रहा। इसने 20 वर्षों में 16.80 प्रतिशत वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया और 10,000 मासिक निवेश को लगभग 1.68 करोड़ रुपये में बदल दिया।
- तीसरे स्थान पर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल मिडकैप फंड रहा। इस फंड ने 20 वर्षों में 16.52 प्रतिशत का रिटर्न दिया और लगभग 1.61 करोड़ का कोष तैयार किया।
- चौथे स्थान पर यूटीआई हेल्थकेयर म्यूचुअल फंड (रेगूलर) रहा, जिसने 20 वर्षों में 15.61 प्रतिशत रिटर्न देते हुए 10,000 की मासिक एसआईपी को लगभग 1.45 करोड़ रुपये तक पहुंचाया।
- पांचवें स्थान पर डीएसपी इंडिया टीआईजीईआर फंड (रेगूलर) रहा। इंफ्रास्ट्रक्चर थीम पर आधारित इस फंड ने 20 वर्षों में 15.40 प्रतिशत रिटर्न दिया और निवेशकों का कोष करीब 1.40 करोड़ रुपये तक पहुंचा दिया।

अमेरिकी ब्याज दरों, ट्रेजरी यील्ड और वैश्विक अनिश्चितता से बढ़ा दबाव

सात माह के निचले स्तर पर सोना-चांदी, ऐसे में क्या करें निवेशक

बिजनेस डेस्क

जुलाई की शुरुआत सर्राफा बाजार के लिए झटके भरी रही। 1 जुलाई को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में सोने और चांदी की कीमतों में बड़ी गिरावट दर्ज की गई। अमेरिकी ट्रेजरी यील्ड में तेजी, फेडरल रिजर्व की सख्त मौद्रिक नीति के संकेत और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं ने निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया। इसका असर यह हुआ कि सोना और चांदी दोनों सात महीने के निचले स्तर के करीब पहुंच गए। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि यह गिरावट केवल नकारात्मक संकेत नहीं है, बल्कि लंबी अवधि के निवेशकों के लिए अवसर भी बन सकती है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर अगस्त डिलीवरी वाला सोना 1,701 रुपये यानी 1.19 प्रतिशत टूटकर करीब 1.40 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। वहीं सितंबर डिलीवरी वाली चांदी में और बड़ी गिरावट देखने को मिली। चांदी 5,380 रुपये यानी 2.35 प्रतिशत लुढ़ककर 2.23 लाख रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर आ गई।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी कमजोरी का यही रुख दिखाई दिया। कॉमेक्स पर सोना करीब 4,000 डॉलर प्रति औंस के महत्वपूर्ण स्तर के आसपास सात महीने के निचले स्तर पर कारोबार करता रहा, जबकि चांदी लगभग तीन प्रतिशत गिरकर 57.73 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गई।

अमेरिकी फेड की सख्ती बनी सबसे बड़ी वजह

बाजार विशेषज्ञों के अनुसार इस गिरावट की सबसे बड़ी वजह अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व का सख्त रुख है। हाल के दिनों में फेड अधिकारियों ने संकेत दिए हैं कि यदि महंगाई पूरी तरह नियंत्रण में नहीं आती है तो इस वर्ष के अंत तक ब्याज दरों में एक और बढ़ोतरी की जा सकती है। ब्याज दरें बढ़ने से निवेशकों का रुझान सोने जैसी बिना ब्याज वाली परिसंपत्तियों से हटकर बॉन्ड और अन्य ब्याज देने वाले निवेश विकल्पों की ओर बढ़ जाता है। यही कारण है कि सोने और चांदी पर बिकवाली का दबाव लगातार बना हुआ है।

ट्रेजरी यील्ड और मजबूत डॉलर का असर

अमेरिकी सरकारी बॉन्ड यानी ट्रेजरी की यील्ड में तेजी ने भी सोने की चमक फीकी कर दी है। जब ट्रेजरी यील्ड बढ़ती है तो निवेशकों को सुरक्षित और बेहतर रिटर्न वाले विकल्प मिलने लगते हैं। इससे सोने की मांग घटती है। इसके साथ ही डॉलर इंडेक्स में मजबूती आने से भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने और चांदी की कीमतों पर दबाव बढ़ा। चूंकि सोने का कारोबार डॉलर में होता है, इसलिए डॉलर मजबूत होने पर अन्य देशों के निवेशकों के लिए सोना महंगा हो जाता है और मांग कमजोर पड़ जाती है।

मध्य-पूर्व में बढ़ता तनाव भी चिंता का कारण

मध्य-पूर्व में एक बार फिर बढ़ते तनाव ने बाजार की चिंता बढ़ा दी है। ईरान और अमेरिका के बीच रिश्तों में आई तल्खी तथा शांति वार्ता को लेकर अनिश्चितता ने निवेशकों को सतर्क बना दिया है। हालांकि सामान्य परिस्थितियों में ऐसे तनाव के दौरान सोने को सुरक्षित निवेश माना जाता है, लेकिन इस समय ब्याज दरों और डॉलर की मजबूती का प्रभाव अधिक देखने को मिल रहा है। इसके अलावा कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव ने भी वैश्विक महंगाई को लेकर नई चिंताएं पैदा कर दी हैं। यदि तेल महंगा होता है तो महंगाई बढ़ सकती है, जिससे केंद्रीय बैंक ब्याज दरें लंबे समय तक ऊंची रख सकते हैं।

अब अमेरिकी आंकड़ों पर टिकी नजर

बाजार की अगली दिशा काफी हद तक अमेरिका से आने वाले आर्थिक आंकड़ों पर निर्भर करेगी। निवेशकों की नजर जून के ADP रोजगार आंकड़ों और नॉन-फार्म पेरोल डेटा पर है। यदि रोजगार के आंकड़े मजबूत आते हैं तो फेड के लिए ब्याज दरें ऊंची बनाए रखने का आधार मजबूत होगा, जिससे सोने पर दबाव बना रह सकता है। वहीं, यदि आंकड़े उम्मीद से कमजोर आते हैं तो ब्याज दरों में नरमी की उम्मीद बढ़ेगी और सोना-चांदी में रिकवरी देखने को मिल सकती है।

विशेषज्ञों की रायः अभी सतर्कता जरूरी

सर्राफा बाजार के जानकारों का कहना है कि फिलहाल तकनीकी रूप से सोना और चांदी दोनों कमजोर स्थिति में हैं। विशेषज्ञों के अनुसार यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना 4,000 डॉलर प्रति औंस के स्तर से नीचे बना रहता है तो अगला मजबूत सपोर्ट 3,600 डॉलर प्रति औंस के आसपास दिखाई देता है। इसी तरह चांदी यदि 60 डॉलर प्रति औंस के नीचे टिकती है तो इसमें 50 डॉलर प्रति औंस तक गिरावट की संभावना बनी रह सकती है। हालांकि लगातार बिकवाली के कारण दोनों धातुएं अब ओवरसोल्ड जोन में पहुंच चुकी हैं। ऐसे में किसी भी सकारात्मक वैश्विक संकेत या कमजोर अमेरिकी आर्थिक आंकड़ों के बाद तेज तकनीकी रिकवरी भी संभव है।

विशेषज्ञ बोले- जल्दबाजी नहीं, रणनीति के साथ ही करें निवेश

क्या यह खरीदारी का सही समय है?

विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेशकों को घबराने की जरूरत नहीं है। यदि किसी का निवेश लक्ष्य पांच से दस वर्ष या उससे अधिक का है तो ऐसी गिरावट चरणबद्ध निवेश (स्टैगर्ड इन्वेस्टमेंट) का अवसर बन सकती है। एकमुश्त निवेश करने के बजाय किस्तों में खरीदारी करना अधिक सुरक्षित रणनीति मानी जा रही है। इससे यदि कीमतें और गिरती हैं तो औसत खरीद मूल्य कम किया जा सकता है। वहीं अल्पकालिक ट्रेडर्स को फेडरल रिजर्व के अगले संकेत, अमेरिकी बॉन्ड यील्ड, डॉलर इंडेक्स और वैश्विक घटनाक्रमों पर लगातार नजर बनाए रखनी चाहिए।

दीर्घकाल में बनी रहेगी सोने की अहमियत

सोना सदियों से महंगाई, आर्थिक संकट और वैश्विक अनिश्चितताओं के दौरान सबसे भरोसेमंद निवेश विकल्प माना जाता रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि अल्पकाल में कीमतों में उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है, लेकिन लंबी अवधि में सोना निवेश पोर्टफोलियो को स्थिरता देने का महत्वपूर्ण माध्यम बना रहेगा। यही कारण है कि वित्तीय सलाहकार कुल निवेश का एक हिस्सा सोना और चांदी जैसी कीमती धातुओं में रखने की सलाह देते हैं। मौजूदा गिरावट को केवल कमजोरी के रूप में नहीं, बल्कि रणनीतिक निवेश के अवसर के रूप में भी देखा जा सकता है। हालांकि किसी भी निवेश निर्णय से पहले अपनी जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और वित्तीय सलाहकार की राय को जरूर ध्यान में रखना चाहिए।

‘समुत्कर्ष विद्यार्थी प्रोत्साहन उपक्रम’ के प्रथम बैच का वार्षिक उत्सव

एसडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ककराला में अनुसूचित जाति के 101 विद्यार्थी सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

युवा एण्ड सेवा फाउंडेशन की ओर से संचालित ‘समुत्कर्ष विद्यार्थी प्रोत्साहन उपक्रम’ के तहत जिले के अनुसूचित जाति के मेधावी विद्यार्थियों के लिए चलाए जा रहे छात्रवृत्ति कार्यक्रम 2025-26 का वार्षिक उत्सव एवं समापन समारोह शनिवार को आयोजित किया गया। यह समारोह एसडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ककराला में हुआ।

इसमें मुख्य अतिथि मेट्रो ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के चेयरमैन डॉ. पुरुषोत्तम लाल थे। मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह-सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल

कनीना। सम्मान समारोह में हिस्सा लेते विद्यार्थी एवं अभिभावक। फोटो: हरिभूमि

उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय जाट पाली के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने की। समारोह में 101 मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने भारत के गौरवशाली इतिहास और वर्तमान उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि ब्रिटिश काल से पूर्व भारत की साक्षरता दर 80-85 प्रतिशत थी और भारत मसालों व इत्र के निर्यात के साथ वैश्विक अर्थव्यवस्था में अग्रणी था।

वर्तमान परिदृश्य पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि आज भारत अंतरिक्ष विज्ञान में सबसे सस्ते दर पर सैटेलाइट लॉन्च कर रहा है और देश में एक लाख 60 हजार से अधिक मेडिकल एमबीबीएस की सीटें हैं। हमारे इंजीनियर और डॉक्टर विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं। समारोह का शुभारंभ प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुआ।

उन्होंने आंकड़े देते हुए बताया कि आज भी देश में 57 फीसदी महिलाओं में रक्त की कमी है वहीं एक बड़ा वर्ग उच्च शिक्षा व अच्छी सुविधाओं से वंचित है। उन्होंने समाज के उच्च वर्ग के लोगों से आह्वान किया गया कि वे प्रतिभाशाली लेकिन गरीब बच्चों की मुफ्त शिक्षा की जिम्मेदारी उठाएं।

विद्यार्थियों के लिए की गई महत्वपूर्ण घोषणाएं

समारोह के अंत में फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गौतम लाल ने कई अहम घोषणाएं कीं। उन्होंने कहा कि ‘युवा और सेवा फाउंडेशन’ से जुड़े छात्रों को रोजगार और ट्रेनिंग में प्राथमिकता दी जाएगी। इसके साथ ही छात्रों को मेडिकल खर्च और दवाओं पर विशेष छूट मिलेगी। फाउंडेशन की ओर से भविष्य में स्वास्थ्य जांच के लिए निशुल्क मेडिकल कैंप भी लगाए जाएंगे। कार्यक्रम का समापन सभी अतिथियों और वक्ताओं के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर आरएसएस के जिला सह-संघचालक रामजीवन मित्तल, डॉ सुनील कुमार, प्रचार प्रमुख डॉ विक्रम सिवाच, विद्यालय के चेयरमैन जगदेव यादव, सीईओ आरएस यादव, धर्मपाल सिंह, अशोक शर्मा बुचौली, कैलाश चंद पाली, सुरेश कुमार, शिवकुमार अग्रवाल, योगेश, प्राचार्य ओमप्रकाश यादव, कृष्ण सिंह, डॉ नीरज करण सिंह, डॉ आनंद शर्मा, दीपक वशिष्ठ सहित प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

खबर संक्षेप

नन्हे-मुन्नों ने रेन डांस पार्टी में की खूब मस्ती

नारनौल। श्रीकृष्ण सीनियर सेकेंडरी स्कूल भुंगारका में नर्सरी से यूकेजी तक के विद्यार्थियों के लिए रंगारंग रेन डांस पार्टी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नन्हे-मुन्ने बच्चों ने बारिश की फुहारों, मधुर संगीत और मनोरंजक गतिविधियों का भरपूर आनंद लिया। विद्यालय परिसर में विशेष रूप से पूल साइड पर रेन डांस की आकर्षक व्यवस्था की गई, जहां संगीत की धुनों पर बच्चों ने उत्साहपूर्वक नृत्य किया। रंग-बिरंगी छतरियों के साथ आयोजित अम्ब्रेला डांस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा। बच्चों के उत्साह और मुस्कान ने पूरे वातावरण को आनंदमय बना दिया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षकों ने भी बच्चों के साथ नृत्य कर उनका उत्साह बढ़ाया। प्राचार्य वेदपाल यादव ने कहा कि इस प्रकार की मनोरंजक से बच्चों के सर्वांगीण विकास और सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देती हैं।

कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष ने विद्यार्थियों से संवाद कर समस्याओं को सुना

राहुल गांधी का छात्रों की गूंज अभियान युवाओं के भविष्य की लड़ाई : राव नरेंद्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने शहर में आयोजित छात्रों की गूंज कार्यक्रम में विद्यार्थियों से संवाद कर उनकी समस्याओं, सुझावों और आकांक्षाओं को सुना। इस दौरान राव नरेंद्र सिंह ने कहा कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी द्वारा शुरू किया गया छात्रों की गूंज अभियान देश के विद्यार्थियों की आवाज़ को सुनने और शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार लाने का राष्ट्रीय अभियान है।

इसका उद्देश्य केवल समस्याएं गिनाना नहीं, बल्कि छात्रों के अनुभवों के आधार पर भविष्य की शिक्षा नीति तैयार करना है। उन्होंने कहा कि आज का विद्यार्थी पेपर लीक, बढ़ती कोचिंग फीस व उसपे

नारनौल। विद्यार्थियों से बातचीत करते राव नरेंद्र सिंह। फोटो: हरिभूमि

18 प्रतिशत जीएसटी का बोझ, शिक्षा के निजीकरण, भर्ती परीक्षाओं में अनियमितताओं, बेरोज़गारी, मानसिक तनाव और छात्र आत्महत्याओं जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। उन्होंने कहा कि केवल 22 लाख एनईईटी अभ्यर्थियों के परिवार ही हर वर्ष लगभग 1.32 लाख करोड़ अपनी तैयारी पर खर्च करते हैं, जबकि केंद्र सरकार का शिक्षा बजट लगभग 1.4 लाख करोड़ है। इतना ही नहीं, एनईईटी, जेईई, एसएससी, यूपीएससी और आरआरबी जैसी शीर्ष प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी पर देश के परिवार हर वर्ष लगभग 3.5 लाख करोड़ खर्च करते हैं, जो केंद्र सरकार के शिक्षा बजट का लगभग तीन गुना है। करोड़ों परिवार अपनी जीवनभर की कमाई बच्चों की शिक्षा पर लगा रहे हैं, लेकिन इसके कांग्रेस पार्टी प्रत्येक छात्र के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है और छात्रों की गूंज अभियान के माध्यम से विद्यार्थियों की आवाज़ को गांव-गांव, स्कूलों, कॉलेजों, कोचिंग संस्थानों और विश्वविद्यालयों से लेकर सड़क और सदन तक मजबूती से पहुंचाया जाएगा। इस दौरान जिला अध्यक्ष सत्यवीर झुकिया सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद रहें। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा शिक्षा, रोजगार, प्रतियोगी परीक्षाओं, मानसिक स्वास्थ्य और भविष्य से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर अपने विचार साझा किए।

रोजगार की स्थिति भी बेहद चिंताजनक

राव नरेंद्र सिंह ने कहा कि आज की शिक्षा व्यवस्था युवाओं को आगे बढ़ाने के बजाय रिजेक्शन सिस्टम बन गई है। उन्होंने कहा कि लगभग तीन हजार विद्यार्थियों में केवल एक आईएएस, 30 आईआईटी और 180 डॉक्टर बन पाते हैं, जबकि बाकी लाखों युवाओं को असफलता, तनाव और अनिश्चित भविष्य का सामना करना पड़ता है। रोजगार की स्थिति भी बेहद चिंताजनक है, जहां एक हजार विद्यार्थियों में केवल 12 को ही वेतन वाला औपचारिक रोजगार मिलता है, 691 युवा असंगठित एवं असुरक्षित कार्यों में काम करने को मजबूर हैं तथा 297 युवा बेरोजगार या बिना किसी काम के हैं। उन्होंने कहा कि आज 80 प्रतिशत इंजीनियर भी अपनी योग्यता के अनुरूप रोजगार से वंचित हैं।

मार्केट कमेटी ने पौधरोपण कर मनाया जन्मदिन

मंडी अटेली। मार्केट कमेटी अटेली में प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव का 47वां जन्मदिन इस बार पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत मनाया गया। कार्यक्रम को सामाजिक सरोकार से जोड़ते हुए मार्केट परिसर में पौधारोपण किया गया, जिसमें समिति के पदाधिकारियों, स्थानीय लोगों और कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस मौके पर मार्केट कमेटी के चेयरमैन दिनेश जैलदार ने कहा कि बदलते समय में पर्यावरण संरक्षण हम सभी की जिम्मेदारी बन गई है। उन्होंने बताया कि एक पेड़ मां के नाम अभियान केवल एक पहल नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति हमारी भावनाओं और

जिम्मेदारी का प्रतीक है। जन्मदिन जैसे खास अवसर को समाजहित के कार्यों से जोड़ना एक प्रेरणादायक कदम है। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनकी नियमित देखभाल करें, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण मिल सके। उपस्थित लोगों ने स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं और उनके स्वस्थ, सुखी एवं दीर्घायु जीवन की कामना की। इस मौके पर स्वास्थ्य मंत्री आरती राव के पीए विकास यादव, सतीश डीएसपी, सतबीर सरपंच सुजापुर, सतीश यादव, पंकज गौड़, धर्मेंद्र सरपंच आदि मौजूद थे।

नगर पालिका उपाध्यक्ष मंजू कौशिक के भाई गजेंद्र सिंह एडवोकेट का निधन

नारनौल/महेंद्रगढ़। नगरपालिका की उपाध्यक्ष मंजू कौशिक के छोटे भाई एवं राजस्थान विश्वविद्यालय छात्रसंघ जयपुर के पूर्व अध्यक्ष गजेंद्र सिंह एडवोकेट का शुक्रवार को लंबी बीमारी के बाद गुरुग्राम के मेडिसिटी अस्पताल में निधन हो गया। वह 47 वर्ष के थे। गजेंद्र सिंह सेवानिवृत्त

मुख्याध्यापक बलबीर सिंह के पुत्र थे तथा अपने मिलनसार स्वभाव और सामाजिक सक्रियता के लिए जाने जाते थे। उनके निधन से परिवार, मित्रों और क्षेत्र में शोक की लहर है। महेन्द्रगढ़ नगरपालिका की उपाध्यक्ष मंजू कौशिक के अनुज, निदेशक अनिल कौशिक के साले तथा एडवोकेट शैलेंद्र सिंह के भी साले थे। उनका अंतिम संस्कार आज सायं चार बजे उनके पैतृक निवास, पावर हाउस के निकट नारनौल से अंतिम यात्रा के बाद मौदाश्रम श्मशान घाट में किया गया। विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक एवं शिक्षण संस्थाओं से जुड़े लोगों ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति की प्रार्थना की।

जनभागीदारी से खास बना आरती राव का जन्मदिन, उमड़े लोग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

जन्मदिन आमतौर पर केक एवं शुभकामनाओं तक सीमित रह जाते हैं, लेकिन प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव का इस बार मनाया गया जन्मदिन सेवा, संस्कार और सामाजिक सरोकारों का अनूठा उदाहरण बनकर उभरा। अटेली स्थित उनके कार्यालय में दिनभर चले कार्यक्रमों ने इस मौके को एक साधारण उत्सव से आगे बढ़ाकर जनसेवा के पर्व में बदल दिया। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह वैदिक मंत्रोच्चार के बीच हवन-यज्ञ से हुई, जिसे हरीश मुनि द्वारा विधि-विधान से संपन्न कराया गया। यजमान की मुख्य भूमिका में स्वास्थ्य मंत्री के निजी सचिव गोविंद गोस्वामी रहे। इस दौरान उपस्थित कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने आहुति देकर मंत्री के स्वस्थ, दीर्घायु एवं सफल जीवन

मंडी अटेली। आरती राव के जन्मदिन पर कार्यालय में हवन यज्ञ करते हुए। स्वास्थ्य मंत्री के जन्मदिन का केक काटते कार्यकर्ता। फोटो: हरिभूमि

की कामना की। इसके बाद जन्मदिन के अवसर पर केक काटा गया और एक-दूसरे को मिठाइयां खिलाकर खुशियां साझा की गईं। कार्यकर्ताओं का उत्साह चरम पर रहा। इस आयोजन की सबसे खास बात इसकी व्यापक जनभागीदारी रही। भंडारे में बड़ी संख्या में लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम में भाजपा जिला अध्यक्ष यतेंद्र राव, स्वास्थ्य मंत्री के पीए विकास यादव, नगर पालिका चेयरमैन संजय गोयल, मार्केट कमेटी दिनेश जेलदार, मार्केट कमेटी के वाइस चेयरमैन राधेश्याम गोयल, ग्रीवेंस कमेटी सदस्य विजय उर्फ सोनू दौंगड़ा, मंडल महामंत्री इंद्रजीत यादव, पूर्व मंडल अध्यक्ष कृष्ण शर्मा, अटेली मंडल अध्यक्ष मुकेश कुमार गनियार, सतीश डीएसपी, टिंकू ढाणा, तेजप्रकाश, कर्मवीर खिंची, सतवीर सरपंच सुजापुर, मनजीत, हरपाल आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सूरज कॉलेज की छात्रा उमंग यूनिवर्सिटी की टॉप 10 में

महेंद्रगढ़। इंदिरा गांधी यूनिवर्सिटी मीरपुर रेवाड़ी द्वारा बीएससी मेडिकल के छठे सेमेस्टर के परिणाम में सूरज कॉलेज के विद्यार्थियों का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा। कॉलेज निदेशक संदीप प्रसाद ने बताया कि बीएससी मेडिकल छठे सेमेस्टर की छात्रा उमंग पुत्री विजय सिंह ने 91.56 प्रतिशत अंक लेकर पूरे विश्वविद्यालय में द्वितीय एवं कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी कोर्स की छात्रा आरती पुत्री रविन्द्र कुमार ने 87.78 प्रतिशत अंक के साथ कॉलेज में द्वितीय स्थान एवं तन्नु पुत्री कृष्ण कुमार ने 86.22 प्रतिशत अंक लेकर तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी कोर्स की छात्रा निशु कुमारी पुत्री जसविन्द्र ने 85.33 प्रतिशत, प्रशांत कौशिक पुत्र दर्शन कौशिक ने 83.11 प्रतिशत, प्राची पुत्री सुरत सिंह ने 81.33 प्रतिशत, हिमांशी पुत्री योगवर्थ ने 80.22 प्रतिशत, मोनिका पुत्री संजय ने 79.56 प्रतिशत, साक्षी पुत्री राजेश कुमार ने 78.22 प्रतिशत, मुस्कान पुत्री बलवान सिंह ने 76.44 प्रतिशत, मुस्कान पुत्री अजीतपाल ने 74.89 प्रतिशत, रितु पुत्री कृष्ण कुमार ने 74.67 प्रतिशत, आशा पुत्री प्रवीण ने 73.56 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। कॉलेज प्राचार्य डॉ. सुधाकर गुप्ता ने बताया कि कॉलेज का श्रेष्ठ परिणाम विद्यार्थियों के कठोर परिश्रम व शिक्षको के मार्गदर्शन का परिणाम है। उन्होंने बताया कि कॉलेज के विद्यार्थी किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। कॉलेज निदेशक संदीप प्रसाद ने भी परिणाम पर खुशी जाहिर करते हुए विद्यार्थियों, अभिभावकों व शिक्षकों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य के लिए कामना की। सूरज कॉलेज में विभिन्न विषयों के लिए दाखिला प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है।

उमंग

तन्नू

आरती

अंतरराष्ट्रीय गणित ओलंपियाड के विजेता विद्यार्थियों का सम्मान

महेंद्रगढ़। बीआर आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल सेहलंग में अंतरराष्ट्रीय गणित ओलंपियाड में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों के लिए समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के चेयरमैन हरीश भारद्वाज ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय की प्राचार्या ज्योति भारद्वाज ने की। समारोह के दौरान विद्यालय के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए पदक एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कक्षा तीसरी से पूर्वा पुत्री योगेंद्र गांव बालरोड तथा पुनीत पुत्र योगेश गांव सेहलंग ने अंतरराष्ट्रीय गोल्ड मेडल प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। रेयांश पुत्र हरीश भारद्वाज गांव सेहलंग तथा करिश्मा पुत्री संदीप गांव बालरोड ने अंतरराष्ट्रीय ब्रॉन्ज मेडल प्राप्त किया। गुंजन पुत्री प्रवीण कुमार गांव बसई तथा रौनक पुत्र पवन गांव खुडाना ने अंतरराष्ट्रीय सिल्वर मेडल प्राप्त किया। रौनक को सर्टिफिकेट ऑफ आउटस्टैंडिंग परफॉर्मेंस से भी सम्मानित किया गया, जबकि करिश्मा को भी सर्टिफिकेट ऑफ आउटस्टैंडिंग परफॉर्मेंस प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त कक्षा तीसरी से सनाया पुत्री अनिल गांव खुडाना को जोनल एक्सीलेंस अवार्ड, गरिमा पुत्री शत्रुघन गांव छितरौली, यशिका पुत्री दीपक गांव पोता तथा कक्षा पांचवी से निहीर पुत्री नवीन गांव पालड़ी को सर्टिफिकेट ऑफ जोनल एक्सीलेंस तथा पंकज पुत्र राजेश गांव स्याणा ने जोनल गोल्ड मेडल एवं सर्टिफिकेट ऑफ जोनल एक्सीलेंस प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। प्राचार्या ज्योति भारद्वाज ने कहा कि विद्यार्थियों की यह सफलता उनकी निरंतर मेहनत, शिक्षकों के समर्पण तथा अभिभावकों के सहयोग का परिणाम है।

बॉडी हेल्थ चेकअप कैम्प में 70 लोगों ने करवाई जांच

नारनौल। भारत विकास परिषद की ओर से निजी पैथ लैब के सहयोग से शनिवार मानक चौक के पास स्थित एसएस जैन धर्मशाला में बॉडी हेल्थ चेकअप कैम्प का आयोजन किया गया। कैम्प में 70 लोगों ने अपना सम्पूर्ण बॉडी हेल्थ चेकअप करवाकर स्वास्थ्य लाभ लिया।

कैम्प का शुभारंभ भारत विकास परिषद के राष्ट्रीय सह संयोजक सेवा प्रकल्प महिपाल यादव ने बतौर मुख्य अतिथि दीप प्रज्ज्वलित कर किया। उन्होंने कहा कि भारत विकास परिषद संपर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा, समर्पण के मूल मंत्र पर कार्य करते हुए निरंतर स्वास्थ्य एवं सेवा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रही है। समय-समय पर ऐसे स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन समाज के लिए अत्यंत लाभदायक है। इस कैम्प में लगभग 5000 के पैकेज को मात्र 499 में उपलब्ध कराया गया। पैकेज में सीबीसी, ईएसआर, रैंडम ब्लड शुगर, लीवर प्रोफाइल, किडनी प्रोफाइल, लिपिड प्रोफाइल, थायराइड, युरिन, आयरन प्रोफाइल, विटामिन डी, बी12, एचबीए जैसी 14 प्रकार की महत्वपूर्ण जांचें शामिल थीं। परिषद अध्यक्ष मुकेश जैन ने बताया कि बढ़ती हुई जीवनशैली संबंधी बीमारियों को देखते हुए परिषद द्वारा समय-समय पर स्वास्थ्य जांच शिविर लगाए जाते हैं, ताकि समय रहते बीमारियों की पहचान कर उपचार किया जा सके। सचिव संदीप शुक्ला, कोषाध्यक्ष भगत सिंह सैनी एवं सेवा प्रकल्प संयोजक पवन कुमार यादव ने बताया कि कैम्प में आए सभी लोगों को रिपोर्ट के साथ आवश्यक स्वास्थ्य परामर्श भी दिया गया। इस मौके पर महेंद्र शर्मा, एडवोकेट राजकुमार यादव, डॉ. जितेंद्र भारद्वाज, पवन अरोड़ा, सुनील चुघ, सुभाष कश्यप, नीरज अग्रवाल, विजय जिंदल, नवीन गुप्ता, अश्वनी कटारिया आदि मौजूद थे।

न्यूज डायरी

यदुवंशी में कैलिग्राफी राइटिंग प्रतियोगिता हुई

महेंद्रगढ़। यदुवंशी शिक्षा निकेतन में शनिवार गतिविधि के अंतर्गत कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिए कैलिग्राफी राइटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में सुंदर लेखन, रचनात्मकता एवं एकाग्रता का विकास करना था। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह और आत्मविश्वास के साथ भाग लिया। उन्होंने अंग्रेजी भाषा में आकर्षक और कलात्मक लेखन प्रस्तुत कर अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों की सुंदर हस्तलिपि, अक्षरों की स्पष्टता, संतुलन तथा रचनात्मक प्रस्तुति ने सभी को प्रभावित किया। ग्रुप चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि कैलिग्राफी केवल सुंदर लिखावट नहीं, बल्कि, धैर्य और एकाग्रता का प्रतीक है। आज आप सभी ने अपनी प्रतिभा और रचनात्मक सोच का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

छात्रों को दिया गीता के अनुरूप जीवन जीने का मंत्र

नारनौल। स्थानीय हरियाणा पब्लिक स्कूल में स्वामी रमणानंद गिरी महाराज के सान्निध्य में एक आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डायरेक्टर पुष्करमल वर्मा की अगुवाई में संपन्न हुए इस कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के श्रीचरणों में दीप प्रज्वलन व संगीतमय वंदना के साथ हुआ। इसके उपरांत, भारतीय सांस्कृतिक जीवन पद्धति और वन महोत्सव की पावन परंपरा को चरितार्थ करते हुए विद्यालय के प्राचार्य सुनील कुमार एवं डीन मनोज भारद्वाज ने स्वामी जी को तुलसी का पौधा भेंट कर उनका आत्मीय अभिनंदन किया। अपने ओजस्वी उद्बोधन में स्वामी रमणानंद गिरी महाराज ने विद्यार्थियों को अपनी समृद्ध सनातन संस्कृति की जड़ों की ओर लौटने का मंत्र दिया। उन्होंने पौराणिक आख्यानों और विशेषकर श्रीमद्भगवद्गीता के व्यावहारिक सूत्रों को रेखांकित करते हुए छात्रों को मानवीय जीवन मूल्यों, नैतिक कर्त्तव्यों और श्रेष्ठ जीवन यापन की राह दिखाई। कार्यक्रम के समापन पर स्वामी जी ने परिसर में वृक्षारोपण कर जन-जन को प्रकृति संरक्षण और पर्यावरण संवर्धन का दिव्य संदेश भी दिया।

आरआरसीएम में मनाया वन महोत्सव

महेंद्रगढ़। आरआरसीएम विद्यालय में वन महोत्सव सप्ताह के उपलक्ष्य में बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया कक्षा तीसरी से आठवी तक के बच्चों ने विद्यालय में विभिन्न तरह से फूलों के और औषधि वाले पौधे लगाएं। पौधों में लगी खरपतवार को भी अपने शिक्षकों के साथ मिलकर साफ किया। इस उपलक्ष्य में संस्था के चेयरमैन रोशनलाल ने बच्चों को पर्यावरण के महत्व को समझाया और उन्होंने ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर संस्था के प्राचार्य हरिप्रकाश शर्मा, गतिविधि इंचार्ज शीतल यादव, विज्ञान की अध्यापिका पूजा यादव, हिन्दी अध्यापिका सरिता यादव व मनीषा अध्यापिका ने और बच्चों ने अहम भूमिका निभाई।

कॉलेज की छात्राओं ने फिर लहराया परचम

नारनौल। हाल ही में इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर की ओर से कला वर्ग छठा सेमेस्टर का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया। हर बार की तरह इस बार भी यदुवंशी डिग्री कॉलेज के विद्यार्थियों ने बहुत ही बेहतरीन परिणाम दिया। कॉलेज की छात्रा सिलविस पुत्री विकास कुमार ने विश्वविद्यालय में चौथा स्थान व आशा पुत्री विक्रम सिंह ने छठा स्थान इसी कड़ी में शिवाती यादव पुत्री सुनील कुमार ने सातवां स्थान व किरण पुत्री अशोक कुमार ने नौवां स्थान प्राप्त किया।इसके अतिरिक्त अन्य विद्यार्थियों का परिणाम भी बहुत ही सराहनीय रहा। इसी उपलक्ष्य में यदुवंशी ग्रुप के चेयरमैन व पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने सभी विद्यार्थियों को उनकी सफलता के लिए बधाई दी व सभी अध्यापकों की सराहना की। इस अवसर पर यदुवंशी ग्रुप के सीईओ तनीष राव ने बताया कि वह उन सभी छात्रों को हार्दिक बधाई देना चाहते है, जिन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। इस मौके पर संस्था निदेशिका सुरेश यादव, डा. प्रदीप यादव, प्राचार्य बजरंग लाल, डा. सोनल यादव व सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे व सभी ने विद्यार्थियों का हौंसला बढ़ाया।

जीएल महिला डिग्री कॉलेज की छात्रा रही प्रथम

महेंद्रगढ़। जीएल महिला डिग्री कॉलेज की छात्राओं ने बीएससी छठे सेमेस्टर की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया है। बीएससी नॉन-मेडिकल की छात्रा सोनम पुत्री जसवंत, निवासी गढ़ी ने 86.44 प्रतिशत अंक प्राप्त कर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं दूसरी ओर बीएससी मेडिकल में खुशबू बाई पुत्री राजेश निवासी कपूरी ने 82.93 प्रतिशत अंक प्राप्त कर महाविद्यालय में प्रथम स्थान हासिल किया। अनुपमा पुत्री अशोक निवासी काकराला ने 80 प्रतिशत अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया, जबकि अंजली पुत्री अत्तर सिंह निवासी धमौंदा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। महाविद्यालय की अन्य छात्राओं का परीक्षा परिणाम भी अत्यंत संतोषजनक एवं सराहनीय रहा। इस शानदार उपलब्धि पर महाविद्यालय प्रबंधन, प्राचार्य एवं समस्त स्टाफ ने सभी सफल छात्राओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि छात्राओं की यह सफलता उनकी मेहनत, अभिभावकों के सहयोग तथा शिक्षकों के समर्पित मार्गदर्शन का परिणाम है। महाविद्यालय भविष्य में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं उत्कृष्ट परिणाम देने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेगा। शैक्षिणक के अलावा सांस्कृतिक गतिविधियों में भी कॉलेज की यूनिवर्सिटी में प्रथम स्थान आता रहा है। अच्छे परिणाम के लिए कॉलेज स्टाफ और अभिभावक बधाई के पात्र हैं।

सोनम

खुशबु

अनुपमा

10th & 12th (NIOS)
ओपन से पास करें।

प्रधान ने व्यक्तिगत मिल निर्णय पर पुनर्विचार करने का किया था आग्रह, नहीं बनी बात तो कार्यकारिणी ने लिया सर्वसम्मति से फैसला

25 जून को महासचिव चुने गए जयसिंह ने व्यक्तिगत एवं अन्य कारणों का हवाला देते हुए लिखित में प्रधान को दिया था इस्तीफा

जयसिंह का इस्तीफा स्वीकार, 1 वोट से चुनाव हारने वाली रेणु बनीं महासचिव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

शहर की अग्रणी सामाजिक संस्था सैनी सभा में महासचिव पद को लेकर चल रही स्थिति का शनिवार को पटाक्षेप हो गया। 24 मई को हुए चुनाव में महज एक वोट से पराजित हुईं रेणु दहिया को कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से कार्यकारी महासचिव नियुक्त कर दिया। यह निर्णय नवनिर्वाचित महासचिव जयसिंह सैनी की ओर से अपने पद से दिए गए इस्तीफे को स्वीकार किए जाने के बाद लिया गया। जानकारी के अनुसार 24 मई को सैनी

नारनौल। कार्यकारी महासचिव बनने पर रेणु दहिया को कुर्सी पर बैठाते प्रधान हरिश सैनी।

सभा के प्रधान, उपप्रधान, महासचिव, सचिव, कोषाध्यक्ष तथा पांच पदों के लिए चुनाव हुए थे। महासचिव पद पर जयसिंह सैनी और रेणु दहिया के बीच बेहद कांटे का मुकाबला हुआ था। जिसमें जयसिंह सैनी मात्र एक वोट के अंतर से विजयी घोषित हुए थे। हालांकि चुनाव के बाद वे महासचिव का कार्यभार ग्रहण नहीं कर पाए। बताया गया कि 25 जून को जयसिंह सैनी ने अपने व्यक्तिगत एवं अन्य कारणों का हवाला देते हुए सैनी सभा के प्रधान हरीश सैनी एडवोकेट को लिखित रूप से इस्तीफा सौंप दिया। अपने पत्र में वे महासचिव पद की जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में असमर्थ हैं और उनका इस्तीफा स्वीकार किया जाए। इस्तीफा मिलने के बाद सैनी सभा के प्रधान हरीश सैनी एडवोकेट ने कई बार जयसिंह सैनी से व्यक्तिगत मुलाकात कर उन्हें निर्णय पर पुनर्विचार करने और समाजहित में पदभार संभालने का आग्रह किया।

सांसद ने मिली कार्यकारिणी, सोलर पैनल के लिए 10 लाख देंगे ग्रांट

कार्यकारी महासचिव रेणू दहिया बनने के बाद सैनी सभा कार्यकारिणी पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस पहुंची। वहां सांसद चौधरी धर्मवीर सिंह प्रेसवार्ता में व्यस्त थे। प्रेसवार्ता समाप्ति पर सैनी सभा कार्यकारिणी ने सांसद से मुलाकात की। इस दौरान महासचिव के इस्तीफा देने और नई कार्यकारी महासचिव पद पर महिला रेणू दहिया पर सर्वसम्मति फैसले से सांसद को अवगत करवाया तो सांसद ने स्वागत किया। इस दौरान सैनी सभा की मांग पर सोलर पैनल के लिए 10 लाख की ग्रांट ओर देने का आश्वासन दिया। सांसद यह राशि नगर परिषद के माध्यम से देंगे।

रामनरेश सैनी ने रेणु के नाम का रखा प्रस्ताव

इसके उपरांत सभा के संविधान की धारा 13 की उपधारा (4) के तहत रिक्त हुए महासचिव पद को भरने की प्रक्रिया शुरू की गई। कार्यकारिणी सदस्य रामनरेश सैनी ने रेणु दहिया के नाम का प्रस्ताव रखा, जिसका उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने सर्वसम्मति से समर्थन किया। इसके साथ ही रेणु दहिया को सैनी सभा का कार्यकारी महासचिव नियुक्त कर दिया गया। निर्णय के बाद कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारियों और सदस्यों ने रेणु दहिया का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया तथा उन्हें महासचिव की सीट पर बैठाकर नई जिम्मेदारी संभालने के लिए शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर नवनियुक्त कार्यकारी महासचिव रेणु दहिया ने कार्यकारिणी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संगठन ने उन पर जो विश्वास जताया है, उस पर वे पूरी निष्ठा, ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ खरा उतरने का प्रयास करेंगी। उन्होंने कहा कि सैनी सभा के संविधान, समाजहित और संगठन की गरिमा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए सभी पदाधिकारियों एवं समाज के सहयोग से संस्था को और अधिक मजबूत बनाने का कार्य किया जाएगा।

खबर संक्षेप

कपिल की मौत आम नहीं सिस्टम की लापरवाही: राता

मंडी अटेली। गांव सैदपुर निवासी कपिल की मौत का मामला लगातार तूल पकड़ता जा रहा है। इस बीच कांग्रेस के वरिष्ठ नेता महेंद्र सिंह राता ने इस घटना को साधारण मौत मानने से इनकार करते हुए इसे व्यवस्था की गंभीर लापरवाही का परिणाम बताया है। इसी माह एक जुलाई को पंचकूला स्थित ताऊ देवीलाल स्टेडियम में हरियाणा पुलिस कांस्टेबल भर्ती के फिजिकल टेस्ट के दौरान कपिल दूसरे राउंड में दौड़ते समय अचानक गिर पड़ा था। उचित चिकित्सीय व्यवस्था और समय पर एंबुलेंस सुविधा उपलब्ध नहीं करवाई गई, जिसके चलते उसकी जान चली गई। महेंद्र सिंह राता ने हरियाणा स्टाफ सिलेक्शन कमीशन पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि भर्ती प्रक्रिया के दौरान आवश्यक तैयारियां नहीं की गई, जो एक बड़ी चूक है।

एसआइआर जागरूकता अभियान चलाया

नांगल चौधरी। विशेष गहन मतदाता पुनरीक्षण अभियान को रफ्तार देने के लिए गोरक्षा दल नांगल चौधरी ने जिम्मेवारी संभाली है। समाजसेवी सुधीर चौधरी ने जागरूकता वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया है जो 14 जुलाई तक नांगल चौधरी तहसील के प्रत्येक गांव में मतदाताओं को जागरूक करेगा। साथ ही युवाओं की एक टीम गठित की है जिससे मतदाताओं के आवेदन भरने का दायित्व सौंपा गया है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए प्रत्येक पात्र नागरिक का मतदाता सूची में नाम होना आवश्यक है।

हिस्ट्रीशीटर गिरफ्तार 21 मामले पहले से दर्ज

मंडी अटेली। क्षेत्र में एक युवक का अपहरण कर उसके साथ मारपीट करने के मामले में कार्रवाई करते हुए तीन जुलाई को हिस्ट्रीशीटर आरोपित प्रदीप गिरफ्तार किया और न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया। रिमांड के दौरान पूछताछ में उससे एक लोहे की नलपाइप बरामद की गई है। आरोपित के खिलाफ पहले से 21 मुकदमे दर्ज हैं। इस मामले में अन्य आरोपितों को पहले गिरफ्तार किया जा चुका है। मामले की जांच में सामने आया कि आपस में हुई कहासुनी को लेकर आरोपितों ने वारदात को अंजाम दिया था।

करोड़ों रुपये की विभिन्न जलापूर्ति परियोजनाओं को मिली मंजूरी

11 गांवों में बिछेगी नई पेयजल पाइपलाइन बनेंगे बोरवेल और बूस्टिंग स्टेशन: विधायक

- जल स्त्रोत होंगे मजबूत, कई गांवों में नए बोरवेल भी होंगे स्थापित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए सरकार ने करोड़ों रुपये की विभिन्न जलापूर्ति परियोजनाओं को स्वीकृति दी है। विधायक कंलर सिंह यादन ने बताया कि इन योजनाओं के तहत 11 से अधिक गांवों में नई पेयजल पाइपलाइन बिछाई जाएगी, कई गांवों में नए बोरवेल बनाए जाएंगे, जबकि आवश्यक स्थानों पर बूस्टिंग स्टेशन और वाटर बॉक्स का निर्माण भी कराया जाएगा।

इन परियोजनाओं के पूरा होने से हजारों ग्रामीणों को नियमित और पर्याप्त पेयजल उपलब्ध हो सकेगा तथा गर्मियों के दौरान पानी की कमी की समस्या से काफी हद तक राहत मिलेगी। स्वीकृत योजनाओं के अनुसार गांव सिसोठ में 100 एमएम व्यास की 2208 मीटर लंबी नई

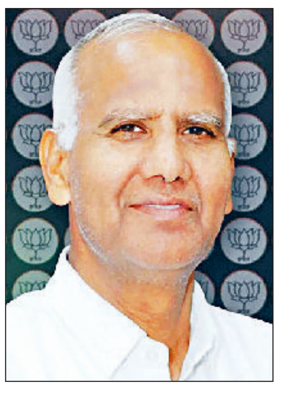

पेयजल पाइपलाइन बिछाई जाएगी। इस कार्य पर 37 लाख 44 हजार रुपये खर्च किए जाएंगे। इस पाइपलाइन के बिछने से गांव के विभिन्न हिस्सों तक बेहतर जलापूर्ति सुनिश्चित होगी और पुराने नेटवर्क पर निर्भरता कम होगी।

इसी प्रकार दूलोठ अहीर बूस्टिंग स्टेशन से जुड़े क्षेत्र में भी पेयजल वितरण प्रणाली को मजबूत किया जाएगा। यहां 100 एमएम, 150 एमएम तथा 200 एमएम व्यास की क्रमशः 3369 मीटर, 1075 मीटर और 952 मीटर लंबी पाइपलाइन बिछाई जाएगी। इस महत्वपूर्ण परियोजना पर लगभग 3 करोड़ 23 लाख रुपये की लागत आएगी। अधिकारियों के अनुसार बड़े व्यास की पाइपलाइन बिछने से पानी का दबाव बेहतर रहेगा और अंतिम छोर तक भी पर्याप्त मात्रा में पानी पहुंच सकेगा। एक अन्य बड़ी योजना के तहत बुडीन, बलायचा, निम्बहेड़ा और सोहला गांवों में विभिन्न व्यास की कुल 13 हजार 831 मीटर लंबी पाइपलाइन बिछाई जाएगी।

इसके साथ ही बुड़ीन में एक आधुनिक वाटर बॉक्स का निर्माण किया जाएगा, जिसके माध्यम से इन गांवों तक व्यवस्थित और निर्बाध पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी। इस पूरी परियोजना पर लगभग 14 करोड़ 23 लाख रुपये खर्च किए जाएंगे। यह योजना जिले की सबसे बड़ी पेयजल परियोजनाओं में से एक मानी जा रही है।

पेयजल समस्याओं का समाधान होगा

विधायक कंवर सिंह यादव ने बताया कि इन योजनाओं के पूरा होने से क्षेत्र के हजारों ग्रामीणों को स्वच्छ एवं पर्याप्त पेयजल उपलब्ध होगा और लंबे समय से चली आ रही पेयजल समस्याओं का समाधान होगा। इन सभी परियोजनाओं की प्रशासनिक एवं तकनीकी प्रक्रियाएं अगले दो महीने के भीतर पूरी कर ली जाएंगी, जिसके बाद कार्यों को शीघ्र शुरू कर निर्धारित समयावधि में पूरा कराया जाएगा।

जल स्त्रोतों को किया जाएगा मजबूत

जल स्रोतों को मजबूत करने के लिए कई गांवों में नए बोरवेल भी स्थापित किए जाएंगे। सिसोठ और मेघनवास में 500 मीटर लंबी 100 एमएम व्यास की पाइपलाइन के साथ दो नए बोरवेल बनाए जाएंगे। इस कार्य के लिए 56 लाख 18 हजार रुपये की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गई है। इन बोरवेलों के चालू होने से दोनों गांवों में भूजल आधारित पेयजल आपूर्ति को मजबूती मिलेगी। इसी क्रम में खायरा और निम्भेड़ा गांवों में 600 मीटर लंबी पाइपलाइन के साथ दो नए बोरवेल बनाए जाएंगे। इस योजना पर 44 लाख 75 हजार रुपये खर्च किए जाएंगे। इससे इन गांवों में जल संकट से प्रभावित क्षेत्रों को राहत मिलने की उम्मीद है। कोथल कलां, भांडोर ऊंची, भांडोर नीची और जासावास गांवों में भी पेयजल व्यवस्था को मजबूत करने के लिए 100 एमएम व्यास की पाइपलाइन के साथ चार नए बोरवेल बनाए जाएंगे। इस परियोजना की अनुमानित लागत 89 लाख रुपये निर्धारित की गई है। इन गांवों में लंबे समय से बेहतर पेयजल व्यवस्था की मांग की जा रही थी, जिसे अब इन योजनाओं के माध्यम से पूरा किया जाएगा। इसके अलावा बुड़ीन, देवराली, खैरोली और पायगा गांवों में 2600 मीटर लंबी 100 एमएम व्यास की पाइपलाइन बिछाने के साथ पांच नए बोरवेल बनाए जाएंगे। इस कार्य पर 1 करोड़ 8 लाख रुपये खर्च किए जाएंगे। यहां 100 एमएम व्यास की पाइपलाइन के साथ छह नए बोरवेल बनाए जाएंगे, जिन पर लगभग 1 करोड़ 71 लाख रुपये की लागत आएगी। इन गांवों में बढ़ती आबादी और पेयजल की मांग को देखते हुए यह परियोजना काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

बसई में दबेगी 1500 मीटर लाइन और दो नए बोरवेल

बसई गांव में 1500 मीटर लंबी पाइपलाइन बिछाने के साथ दो नए बोरवेल बनाए जाएंगे। इस योजना पर 71 लाख 25 हजार रुपये खर्च किए जाएंगे। वहीं श्यामपुरा गांव में 250 मीटर लंबी पाइपलाइन के साथ एक नया बोरवेल बनाया जाएगा, जिसकी अनुमानित लागत 24 लाख 75 हजार रुपये होगी। इन दोनों परियोजनाओं से स्थानीय स्तर पर पेयजल उपलब्धता बढ़ेगी और ग्रामीणों को नियमित जलापूर्ति का लाभ मिलेगा। इसके अतिरिक्त सुरेहती पिलानिया (काली पहाड़ी) में एक नए बूस्टिंग स्टेशन का निर्माण कराया जाएगा। इस कार्य पर 84 लाख 74 हजार रुपये खर्च किए जाएंगे। बूस्टिंग स्टेशन बनने से ऊंचाई वाले क्षेत्रों और दूरस्थ बस्तियों तक पर्याप्त दबाव के साथ पानी पहुंचाना संभव होगा। इससे जल वितरण प्रणाली अधिक प्रभावी और संतुलित बनेगी।

वितरण व्यवस्था भी अधिक व्यवस्थित होगी

जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों के अनुसार इन सभी परियोजनाओं का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति को स्थायी और मजबूत बनाना है। कई गांवों में पुरानी पाइपलाइनें जर्जर होने के कारण पानी का रिसाव होता था और पर्याप्त दबाव नहीं बन पाता था। नई पाइपलाइन, अतिरिक्त बोरवेल और बूस्टिंग स्टेशन बनने से न केवल जलापूर्ति की क्षमता बढ़ेगी, बल्कि वितरण व्यवस्था भी अधिक व्यवस्थित होगी।

घर में घुसकर बुजुर्ग दंपत्ति पर हमला कर किया घायल

कनीना। नंबर वार्ड आठ में एक बुजुर्ग दंपति पर उनके ही पड़ोसियों ने घर में घुसकर हमला कर घायल कर दिया। इस हिंसक वारदात में 62 वर्षीय राजबाला और उनके 67 वर्षीय पति रामेश्वर दयाल गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पीड़ित राजबाला ने पुलिस को दी शिकायत में बताया है कि वह अपने पति के साथ निर्माणाधीन मकान में थी। इसी दौरान उनके पड़ोसी मुकेश कुमार, उसकी पत्नी सुमन और बेटे हिमांशु ने उनके घर में जबरन प्रवेश किया। आरोपितों ने लोहे की रॉड और अन्य हथियारों से दोनों बुजुर्गों पर अचानक हमला कर दिया। बुजुर्ग दंपति ने किसी तरह वहां से भागकर अपनी जान बचाई। जिन्हें बाद में उप नागरिक अस्पताल कनीना में दाखिल कराया गया। जहां चिकित्सकों ने रामेश्वर दयाल के शरीर पर पांच चोटें तथा राजबाला के पैर की हड्डी में फ्रैक्चर की पुष्टि की है। थाना शहर कनीना की पुलिस ने मारपीट के आरोपितों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज कर जांच कार्रवाई एसआई सनेहलता को सौंप दी है जो गहराई से छानबीन कर रही है।

मकान से दिनदहाड़े जेवरात चोरी भतीजे व साथी पर शक गहराया

कनीना। कनीना के वार्ड नंबर तीन में एक मकान से दिनदहाड़े सोने के आभूषण चोरी होने का मामला सामने आया है। जिसे लेकर पीड़ित महिला ने कनीना पुलिस थाने में लिखित शिकायत देकर अपने ही भतीजे और उसके एक साथी पर चोरी करने का आरोप लगाया है।

महिला प्रवीन ने शिकायत में बताया कि वह कनीना में एक दुकान पर कामकर घर का खर्चा चला रही है। दो जुलाई की सुबह वह हमेशा की तरह अपने काम पर गई हुई थीं। सायं को जब प्रवीन घर वापस लौटीं, तो उन्होंने देखा कि अलमारी खुली पड़ी है। जांच करने पर पता चला कि अलमारी में रखे उनके सोने के कुंडल गायब है। महिला के 13 वर्षीय बेटे लकी ने बताया कि दिन के समय उनका भतीजा हितेश एक साथी के साथ उनके घर पर आया था। इतना ही नहीं, महिला ने अपने स्तर पर की गई खोजबीन के बाद पुलिस को बताया कि उपरोक्त दोनों युवक नशा करते हैं जिन्होंने एक तोला वजन के कुंडल कनीना में स्थित एक ज्वैलर्स की दुकान पर औने-पौने भाव में बेच दिए। जब उसने ज्वैलर्स की दुकान पर जाकर पूछताछ की तो मालूम हुआ कि कुंडल गला दिए गए हैं।

संत कबीर दास का 629वां प्रकटोत्सव मनाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

शहर स्थित संत कबीर आश्रम मंदिर ट्रस्ट में शनिवार को संत शिरोमणि कबीर दास महाराज का 629वां प्रकटोत्सव श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में विधायक एवं पूर्व मंत्री ओमप्रकाश यादव मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस अवसर पर विधायक ने कहा कि संत कबीर दास सादगी, प्रेम और शाकाहारी जीवन के प्रबल समर्थक थे। यही कारण है कि उनके प्रकटोत्सव पर सदैव शाकाहारी भंडारे का आयोजन किया जाता है। उन्होंने कहा कि संत कबीर दास 15वीं शताब्दी के महान भारतीय संत, कवि और समाज सुधारक थे। उन्होंने हिंदू और मुस्लिम समाज में फैली कट्टरता का विरोध करते हुए धार्मिक सद्भाव, सामाजिक समानता और मानवता का संदेश दिया। उन्होंने बताया कि संत कबीर दास का जन्म काशी (वर्तमान वाराणसी) के लहरतारा क्षेत्र में हुआ माना जाता है। कबीर

नारनौल। संत कबीर दास के चित्र पर पुष्प अर्पित करते विधायक ओमप्रकाश यादव।

ने स्वामी रामानंद को अपना गुरु माना। प्रचलित कथा के अनुसार, कबीर स्वामी रामानंद के आश्रम की सीढ़ियों पर लेट गए थे। प्रातःकाल जब स्वामी रामानंद का पैर अनजाने में कबीर को स्पर्श हुआ तो उनके मुख से 'राम-राम' शब्द निकला, जिसे कबीर ने अपना दीक्षा मंत्र मान लिया। विधायक ने कहा कि संत कबीर ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना का संदेश दिया तथा मूर्तिपूजा, कर्मकांड और जाति-पांति जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया।

श्रीराम मंदिर में चंदे की चोरी पर सरकार जवाब दे: सुशील कुमार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

आम आदमी पार्टी के हरियाणा प्रभारी सुशील कुमार गुप्ता ने कहा कि भाजपा सरकार भ्रष्टाचार के मामलों में पूरी तरह विफल हो चुकी है। उन्होंने आरोप लगाया कि अब तो भगवान श्रीराम के मंदिर में चंदे की चोरी जैसे मामले भी सामने आ रहे हैं, लेकिन जांच के नाम पर केवल जनता को गुमराह किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार बताए कि इस मामले के असली दोषी कब सामने आएंगे।

गुप्ता शनिवार को नारनौल के सैनी सभा भवन में आयोजित आम आदमी पार्टी के जिला महेंद्रगढ़ कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पार्टी संगठन के विस्तार और जनहित के

नारनौल। पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते प्रभारी सुशील गुप्ता।

मुद्दों को लेकर लगातार जनता के बीच जाएगी तथा प्रदेश सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ संघर्ष जारी रखेगी। सम्मेलन के दौरान पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के लिए जिला महेंद्रगढ़ से सदस्य का चुनाव भी हुआ। पार्टी ज्वाइनिंग कमेटी के अध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक ओमप्रकाश गुर्जर तथा राजेंद्र सुरेहती की मौजूद रहे।

ये रहे मौजूद

सम्मेलन में बीर सिंह सरपंच, राजेश कुमार, जोगिंदर खन्ना, कर्णसिंह फौजी, सत्यनारायण शर्मा, जय सिंह सैनी, आत्माराम सैनी, रामदेव, कमांडो रामदत्त यादव, सुनीता खन्ना, उत्तम यादव, अजीत गोद, विवेक भटनागर, अनुपम गौड़, सुरेश पंडित, सोमबीर सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

चेयरमैन सुभाष चंद्र का जन्मदिन सफाई अभियान के साथ मनाया

नारनौल। स्वच्छ भारत मिशन एवं टास्क फोर्स हरियाणा के कार्यकारी चेयरमैन सुभाष चंद्र का जन्मदिन शनिवार को नेताजी सुभाष चंद्र बोस पार्क में सफाई अभियान चलाकर उत्साहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन मनोनित नगर पार्षद एवं भाजपा जिला कार्यालय मंत्री संजय अमन तथा मिशन के जिला सदस्य शुभम कंछल कारोतावाले के नेतृत्व में किया गया, जिसमें शहर के गणमान्य लोगों और कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस दौरान पार्क परिसर में सफाई अभियान चलाया गया तथा लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया गया। मनोनित पार्षद संजय अमन व मिशन के जिला सदस्य शुभम कंछल कारोतावाले ने अपने विचार व्यक्त किए। इस मौके पर मनोनित पार्षद जगदीश पासी, मार्केट कमेटी सदस्य सतीश वाल्मीकि, देव शर्मा, रमेश, विपिन बहल, दौलत वाल्मीकि, अमित वाल्मीकि, बूथ समिति 'मन की बात' संयोजक साहिल आदि मौजूद थे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डेंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295738500, 9253681005

शिक्षा के मंदिर में घुसे चोर ताले तोड़कर सामान के साथ संपत्ति भी की क्षतिग्रस्त

मंडी अटेली। अटेली क्षेत्र के गांव बिहाली स्थित राजकीय प्राथमिक पाठशाला में अज्ञात चोरों ने रात्रि के समय बंद कमरों के ताले तोड़कर हजारों रुपये का सामान चोरी कर लिया। इस घटना से स्कूल स्टाफ और ग्रामीणों में रोष का माहौल है। मामले को लेकर स्कूल के हेड टीचर दीपक कुमार ने अटेली पुलिस थाने में लिखित शिकायत देकर कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने दी शिकायत में बताया कि शुक्रवार को दोपहर करीब दो बजकर 45 मिनट पर स्कूल की छुट्टी होने के बाद सभी अध्यापक और स्टाफ कमरों को ताला लगाकर घर चले गए थे। शनिवार सुबह जब स्कूल खोला गया तो वहां का दृश्य देखकर सभी हैरान रह गए। स्कूल के कमरों के ताले टूटे हुए थे और अंदर सामान बिखरा पड़ा था। जांच के दौरान पाया गया कि चोर रसोईघर से दो बड़े एल्युमिनियम के बर्तन, दो एल्युमिनियम बाल्टियां, एक गैस सिलेंडर तथा राशन का सामान चोरी कर ले गए। इतना ही नहीं चोरों ने स्कूल की संपत्ति को भी नुकसान पहुंचाया। उन्होंने वाटर कूलर को तोड़कर स्कूल के मैदान में घास के बीच दबा दिया।

परेशानी भाजपा नेता ने पीडब्ल्यूडी विभाग के कार्यकारी अभियंता को कराया निरीक्षण

मेघोत बींजा-नारनौल सड़क मार्ग निर्माण 1 माह से कंडम

क्षतिग्रस्त सड़क मार्ग पर वाहन दुर्घटना बढ़ने पर आक्रोशित ग्रामीणों ने जल्द रिपेयर कराने की लगाई गुहार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नांगल चौधरी

मेघोत बींजा-नारनौल सड़क मार्ग के निर्माण को एक महीना भी नहीं बीता, इससे पहले कंडम होना आरंभ हो गया। ओवरलोड डंपरों के दबाव से कंकर निकल गए तथा गड्ढे होने से वाहन दुर्घटना का खतरा बढ़ गया। परेशान पंचायत प्रतिनिधियों ने भाजपा के पूर्व जिला प्रधान दयाराम यादव को समस्या से अवगत कराया।

इसके बाद उन्होंने पीडब्ल्यूडी विभाग के कार्यकारी अभियंता को मौका निरीक्षण कराया, तथा जल्द रिपेयर करने की हिदायत दी है। उन्होंने बताया कि धोलेड़ा-बिगोपुर की सीमा में क्रशर व माइंस जोन स्थापित है। रोजाना एक हजार से

नांगल चौधरी। एक्सईएन को क्षतिग्रस्त सड़क का निरीक्षण कराते भाजपा नेता।

अधिक लोडिंग डंपरों का आवागमन होता है, जिनके दबाव से मेघोत बींजा-नारनौल सड़क मार्ग क्षतिग्रस्त रहती थी। मजबूती के लिए सीमेंटिड सड़क निर्माण का निर्णय लिया, जिसका करीब 25 करोड़ का एस्टिमेट तैयार किया था। टेंडर प्रक्रिया पूरी होने के बाद चार साल पहले सड़क निर्माण आरंभ किया गया था। चुनावों के दौरान ठेकेदार ने काम रोक दिया जिस कारण वाहन चालकों को सालभर परेशानी झेलनी पड़ी थी।

ग्रामीणों का निरोध बढ़ने पर दुबारा सड़क निर्माण शुरू किया, किंतु निर्माण की स्पीड को बढ़ने के लिए सामग्री की क्वालिटी को खराब कर दिया। इसके साथ उन्होंने सड़क पर पानी का छिड़काव नहीं किया जिस कारण सीमेंट मजबूत नहीं हो पाई। उस दौरान ग्रामीणों ने विभागीय अधिकारियों को ठेकेदार की लापरवाही तथा घटिया सामग्री के इस्तेमाल से अवगत कराया था। बावजूद अधिकारियों ने मौका निरीक्षण तक नहीं किया।

10 साल तक सड़क की देखरेख और रिपेयर करेगी कंपनी

पीडब्ल्यूडी विभाग के कार्यकारी अभियंता अश्वनी कुमार ने बताया कि शिकायत मिलने पर मेघोत बींजा-नारनौल सड़क का निरीक्षण किया है, जिसका कुछ टुकड़ा क्षतिग्रस्त होने की पुष्टि हुई है। रिपेयर के लिए ठेकेदार को निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि सीमेंटिड सड़क मार्ग की निर्माण के बाद 10 साल तक देखरेख और रिपेयर करने की जिम्मेवारी संबंधित ठेकेदार की होती है।

कंकरीट पर दोपहिया वाहन फिसलने की घटना बढ़ी

धोलेड़ा, बिगोपुर, बेरूंडला, खातोली, मेघोत बींजा के ग्रामीणों ने बताया कि सड़क पर कंकर बिखरे हुए हैं। गड्ढों को बचाने के प्रयास में दोपहिया वाहन फिसलने की घटना बढ़ गई हैं। बुधवार को गड्ढे में उछली बाइक से एक महिला गिर गई, जिसे नाजुक स्थिति में नारनौल एडमिट कराया गया, जहां उपचार के बाद महिला को डिस्चार्ज कर दिया। किंतु संभावित हादसे की संभावना बनी होने से ग्रामीणों में आक्रोश बना हुआ है।

क्या कभी हो पाएगी एलियन से मुलाकात !

क्या एलियन कभी पृथ्वी पर आएंगे? क्या उनसे हमारी मुलाकात हो पाएगी? इस सवाल का फिलहाल कोई सीधा 'हां' या 'ना' में जवाब देना मुश्किल है। एलियंस का धरती पर आना भले ही अभी विज्ञान कथाओं की तरह लगता हो, लेकिन वैज्ञानिक प्रयासों से भविष्य में, असंभव सा लगने वाला कुछ भी संभव हो सकता है।

कवर स्टोरी

शिखर चंद जैन

रात के समय जब हम आसमान में टिमटिमाते हुए तारों को देखते हैं, तो हमारे मन में एक सवाल बार-बार उठता है, 'क्या इस विशाल ब्रह्मांड में हम अकेले हैं?' या फिर किसी दूर के ग्रह पर हमारे जैसे ही या हमसे भी ज्यादा समझदार जीव रहते हैं? इन्हीं बाहरी दुनिया के जीवों को हम 'एलियन' या 'एक्स्ट्राटेरेस्ट्रियल' कहते हैं। गणितीय संभावनाओं को देखें तो ब्रह्मांड में कहीं न कहीं जीवन जरूर होना चाहिए। लेकिन अंतरिक्ष की असीम दूरियों को देखते हुए, उनका हमारे पास आना या हमारा उन तक पहुंचना बहुत ही कठिन काम है। वैज्ञानिकों का मानना है कि आने वाले कुछ दशकों में, जैसे-जैसे हमारी तकनीक और बेहतर होगी, हम शायद सौर मंडल के किसी चांद या बाहरी ग्रह पर जीवन के छोटे अंश (जैसे बैक्टीरिया) खोजने में सफल हो जाएंगे।

क्यों बरकरार है संभावना

वैज्ञानिकों के अनुसार, हमारे ब्रह्मांड में अरबों आकाशगंगाएं हैं और हर आकाशगंगा में खरबों तारे और ग्रह हैं। इतनी बड़ी जगह में सिर्फ हमारी पृथ्वी पर ही जीवन हो, ऐसा होना थोड़ा मुश्किल लगता है। इसलिए लगता है कि इस यूनिवर्स में कोई न कोई दूसरी दुनिया हो सकती है। खगोल वैज्ञानिक भी इस विषय पर यही सोचते हैं। इसीलिए वे सालों से एलियंस की खोज कर रहे हैं।

क्या एलियन पृथ्वी पर आएंगे!

हालांकि आम लोगों का मानना है कि कभी न कभी एलियन पृथ्वी पर आए होंगे या आएंगे। लेकिन वैज्ञानिक इस सवाल का जवाब तर्क के आधार पर खोजते हैं। एलियन पृथ्वी पर क्यों आना चाहेंगे? इसके वे कई तर्क देते हैं-

नए घर की खोज: जैसे हमारे वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर जीवन तलाश रहे हैं, वैसे ही एलियन भी अपने रहने के लिए एक नए और सुरक्षित ग्रह की तलाश में पृथ्वी पर आ सकते हैं।

संसाधनों की तलाश: अगर उनके अपने ग्रह के प्राकृतिक संसाधन जैसे पानी, खनिज या ऊर्जा आदि खत्म हो गए हों, तो वे पृथ्वी के संसाधनों का उपयोग करने के लिए यहां का रुख कर सकते हैं।

जिज्ञासा और शोध: हो सकता है कि एलियन भी हमारी पृथ्वी के वैज्ञानिकों की तरह खोजी स्वभाव के हों। वे ब्रह्मांड के दूसरे जीवों यानी हम इंसानों के बारे में जानने और हमसे दोस्ती करने के लिए हमारे पास आ सकते हैं।

तकनीकी श्रेष्ठता: अगर कोई सभ्यता हमसे लाखों साल पुरानी है, तो उनके पास ऐसे स्पेसशिप हो सकते हैं जो रोशनी की रफ्तार से भी तेज चल सकें। ऐसी तकनीक होने पर उनके लिए पृथ्वी तक आना बहुत आसान होगा।

इसके विपरीत एलियन का आना क्यों मुश्किल है, इसके भी कुछ तर्क देते हैं-

अत्यधिक दूरी: ब्रह्मांड इतना बड़ा है कि हमारे सबसे करीबी तारे प्रॉक्सिमा सेंचुरी तक पहुंचने में भी आज की तकनीक से हजारों साल लग जाएंगे। एलियंस के लिए भी इतनी लंबी दूरी तय करना एक बड़ी चुनौती होगी।

समय का चक्र: हो सकता है कि ब्रह्मांड के किसी कोने में एलियन रहे हों, लेकिन वे इंसानों के पैदा होने से करोड़ों साल पहले ही खत्म हो चुके हों, या फिर वे तब आएंगे, जब इंसान धरती से गायब हो चुके होंगे।

संवाद की कमी: हमारी भाषा, रेडियो सिग्नल और सोचने का तरीका उनसे बिल्कुल अलग हो सकता है। मुमकिन है कि वे हमारे सिग्नलों को समझ ही न पा रहे हों।

वैज्ञानिक शोध और प्रयास

वैज्ञानिकों ने एलियंस को ढूंढ़ने और उनसे संपर्क करने के लिए कई प्रयास किए हैं।

सेटी प्रोजेक्ट: सर्च फॉर एक्स्ट्रा टेरेस्ट्रियल इंटेलिजेंस, दुनिया का सबसे बड़ा संगठन है, जो अंतरिक्ष से आने वाले रहस्यमयी सिग्नलों पर नजर रखता है। वैज्ञानिक बड़े-बड़े रेडियो टेलीस्कोप का इस्तेमाल करके आसमान से आने वाली आवाजों और तरंगों को सुनते हैं, ताकि एलियंस का कोई संदेश पकड़ा जा सके।

वोयाजर के गोल्डन रिकॉर्ड्स: साल 1977 में नासा ने अंतरिक्ष में दो स्पेसक्राफ्ट भेजे थे, जिनका नाम 'वोयाजर 1' और 'वोयाजर 2' है। इन स्पेसशिप में एक तांबे की बनी सीडी जैसी 'गोल्डन डिस्क' रखी गई है। इस डिस्क में पृथ्वी की आवाजें, संगीत, 55 भाषाओं में नमस्कार और हमारे ग्रह का नक्शा दर्ज है, ताकि अगर कभी यह किसी एलियन को मिले, तो वे हमारे बारे में जान सकें।

यूएफओ और यूएपी की जांच: दुनिया भर में कई बार आसमान में उड़ने वाली अजीबो-गरीब चीजों जैसे उड़न तश्तरी को देखने का दावा किया गया है। अब अमेरिकी सरकार और नासा जैसी एजेंसियां इन्हें 'यूएपी' (अनआइडेंटिफाइड एनोमैलुअस फैनोमेना) कहकर इन पर आधिकारिक रिसर्च कर रही हैं, ताकि यह साफ हो सके कि ये एलियंस के यान हैं या कोई प्राकृतिक घटना।

बहरहाल, भविष्य में कभी दूसरे ग्रह के वासियों एलियंस से पृथ्वीवासियों की कभी मुलाकात हो पाएगी या नहीं यह तो अभी नहीं कहा जा सकता लेकिन दुनिया भर के वैज्ञानिक इस कोशिश में हर संभव प्रयास कर रहे हैं। *

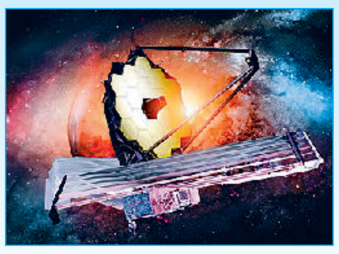

केपलर-जेम्स वेब टेलीस्कोप

नासा के इन आधुनिक टेलीस्कोपों का काम अंतरिक्ष में 'एक्सोप्लैनेट्स' यानी हमारे सौर मंडल से बाहर के ग्रह को खोजना है। वैज्ञानिकों ने अब तक हजारों ऐसे ग्रह खोजे हैं, जो 'गोल्डीलॉक्स जोन' में हैं। इसका मतलब है कि ये ग्रह अपने तारे से न तो बहुत ज्यादा गर्म हैं और न ही बहुत ज्यादा ठंडे, जहां पृथ्वी की तरह पानी और जीवन मौजूद हो सकता है। इसमें जीवन की संभावना भी हो सकती है।

मार्स मिशन

हमारे सबसे नजदीकी ग्रह मंगल पर पानी और जीवन के निशान खोजने के लिए भारत का 'मंगलयान', नासा के 'परसवेरेंस' रोवर जैसे कई मिशन भेजे गए हैं। इनके जरिए वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर सूक्ष्मजीवों के जीवाश्म ढूंढ़ रहे हैं, जो अंतरिक्ष वासी एलियन या जीवन का पहला ठोस सबूत हो सकते हैं।

चिंताजनक है लगातार बढ़ता अंतरिक्ष में वेस्ट मैटर

जिस तरह से हम सबने अपनी पृथ्वी पर प्रदूषक वस्तुओं और कूड़े-कचरे का अंबार लगा रखा है, कुछ ऐसा ही हाल अंतरिक्ष का भी होता जा रहा है। स्पेस में स्पेसक्राफ्ट, एस्ट्रोनॉट्स और सैटेलाइट्स का वेस्ट मैटर भविष्य में गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

स्पेस इश्यू

अंजू जैन

जब हम रात में आसमान की तरफ देखते हैं, तो हमें टिमटिमाते तारे, चंद्रमा और कभी-कभी गुजरते हुए सैटेलाइट्स (उपग्रह) दिखाई देते हैं। यह नजारा बेहद जादुई लगता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हमारे इस खूबसूरत अंतरिक्ष में एक बहुत बड़ी मुसीबत धीरे-धीरे पैर पसार रही है? इस मुसीबत का नाम है-'अंतरिक्ष का कचरा' या 'स्पेस डेब्री'।

क्या है स्पेस डेब्री: जैसे हम अपनी पृथ्वी पर प्लास्टिक, रैपर्स और खराब सामान फेंककर इसे गंदा कर रहे हैं, ठीक वैसे ही इंसानों ने अंतरिक्ष को भी कबाड़खाना बनाना शुरू कर दिया है। अंतरिक्ष कचरा या स्पेस जंक उन सभी मानव-निर्मित बेकार चीजों को कहते हैं, जो अब किसी काम की नहीं रहीं और पृथ्वी के चारों ओर अंतरिक्ष में चक्कर काट रही हैं। इस कचरे में बेकार हो चुके पुराने सैटेलाइट्स, रॉकेट्स के छूटे हुए टुकड़े, अंतरिक्ष यात्रियों के हाथ से छूटे हुए औजार (जैसे स्क्रू-ड्राइवर, ग्लव्स) और सैटेलाइट्स के आपस में टकराने से बने करोड़ों छोटे-छोटे टुकड़े शामिल हैं। वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार, इस समय अंतरिक्ष में लाखों छोटे-बड़े टुकड़े तैर रहे हैं, जो एक बड़े खतरे की घंटी हैं।

स्पेस डेब्री में शामिल चीजें: स्पेस डेब्री में बहुत कुछ हो सकता है। जैसे-जब किसी उपग्रह का जीवनकाल खत्म हो जाता है या उसका ईंधन समाप्त हो जाता है, तो वह वहीं अंतरिक्ष में निष्क्रिय होकर घूमने लगता है। उपग्रहों को अंतरिक्ष में छोड़ने के बाद रॉकेट के निचले और ऊपरी हिस्से अलग हो जाते हैं। ये हिस्से अंतरिक्ष में ही तैरते रह जाते हैं। जब दो सैटेलाइट्स आपस में टकराते हैं, तो उनके परखच्चे उड़ जाते हैं। एक टक्कर से हजारों नए छोटे-छोटे तीखे टुकड़े बन जाते हैं।

कुछ देश अपनी मिसाइल क्षमता को जांचने के लिए अंतरिक्ष में अपने ही पुराने सैटेलाइट को मिसाइल से उड़ा देते हैं। इससे पल भर में बेशुमार कचरा फैल जाता है।

स्पेस वेस्ट से संकट: अब आप सोच रहे होंगे कि अंतरिक्ष तो इतना विशाल है, फिर वहां थोड़े से कबाड़ से क्या फर्क पड़ता है? अंतरिक्ष हमारा भविष्य है। अगर आज हमने इसकी सफाई पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाली पीढ़ी के लिए ब्रह्मांड के रहस्य जानने के सारे रास्ते बंद हो जाएंगे। इसके कई खतरनाक परिणाम हो सकते हैं। अंतरिक्ष में ये टुकड़े धीरे-धीरे नहीं तैरते। इनकी रफ्तार बंदूक की गोली से भी 10 से 15 गुना तेज होती है, लगभग 28,000 किलोमीटर प्रति घंटा। इतनी रफ्तार में एक छोटा-सा पेंट का टुकड़ा या पेंच भी किसी सैटेलाइट से टकराए, तो उसे पूरी तरह तबाह कर सकता है। इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन में हमेशा हमारे वैज्ञानिक रहते हैं। यदि कोई बड़ा टुकड़ा स्पेस स्टेशन से टकरा जाए, तो वहां रहने वाले अंतरिक्ष यात्रियों की जान पर बन आ सकती है। उन्हें कई बार खुद को बचाने के लिए आपातकालीन कैप्सूल में छिपना पड़ता है।

हम मोबाइल के जरिए जो बात करते हैं, जीपीएस से रास्ता देखते हैं, टीवी देखते हैं और मौसम का पूर्वानुमान लगाते हैं, वे सब अंतरिक्ष में मौजूद सैटेलाइट्स की वजह से संभव होता है। अगर कचरे की वजह से ये सैटेलाइट्स नष्ट हो गए, तो हमारी पृथ्वी की आधुनिक लाइफलाइन एकदम रुक-सी जाएगी। अगर अंतरिक्ष में कचरा बहुत ज्यादा बढ़ गया, तो वे आपस में टकराकर और अधिक कचरा बनाएंगे। एक समय ऐसा आएगा कि पृथ्वी के चारों ओर कचरे की ऐसी घनी दीवार बन जाएगी कि इंसान कभी नया रॉकेट या सैटेलाइट अंतरिक्ष में भेज ही नहीं पाएगा। हम हमेशा के लिए पृथ्वी पर कैद हो जाएंगे।

निदान और समाधान: अंतरिक्ष में बढ़ रहे कचरे की इस समस्या के समाधान के लिए वैज्ञानिक लगातार प्रयास कर रहे हैं। दुनिया भर की स्पेस एजेंसियां जैसे भारत की इसरो, अमेरिका की नासा इस मलबे को साफ करने के लिए बेहद अनोखे तरीकों पर काम कर रही हैं। वैज्ञानिक ऐसे विशेष सैटेलाइट बना रहे हैं, जो अंतरिक्ष में जाकर बड़े मलबे पर जाल फेंकेंगे या हारपून (भाला) मारकर उसे पकड़ेंगे और खींचकर पृथ्वी के वायुमंडल की तरफ ले आएंगे।

कुछ जापानी कंपनियां ऐसे सैटेलाइट्स का परीक्षण कर रही हैं, जिनमें बहुत शक्तिशाली चुंबक लगे होंगे। ये चुंबक लोहे और धातु के मलबे को अपनी ओर आकर्षित करके चिपका लेंगे। इस तरह कई और तकनीकें अपनाई जा रही हैं। संभव है इसका स्थायी समाधान खोज लिया जाएगा। *

गजल

हबीब कैफी

चला गया कोई

उम्र अपनी बढ़ा गया कोई
नाम लेते ही आ गया कोई
मैंने थामा था हाथ कांटों में
फूल पाकर छुड़ा गया कोई
उसके सारे निशान जिंदा हैं
कैसे कह दूं चला गया कोई
इक तने पर लिखे थे बरसों से
नाम दोनों मिटा गया कोई
नींद यूं ही नहीं हुई गायब
तेरे किस्से सुना गया कोई
सिर्फ इक बात मैंने पूछी थी
बातें क्या-क्या सुना गया कोई
जिक्र जब भी वफा का आया है
सर झुका कर चला गया कोई

व्यंग्य / सूर्यकुमार पांडेय

महंगाई से मुलाकात

चाहने को हम भी बहुत कुछ चाहते हैं। हमारी पहली चाहत तो यह ही है कि अपने पास अकूत वैध संपत्ति हो। वैध इसलिए, क्योंकि बुल्डोजर से सबको डर लगता है। बड़े-बड़े मुर्गे हलाल हो गए, फिर भला इस पिद्दी के शोरबे की क्या ही औकात है? हमारी दूसरी चाहत है कि महंगाई नाम की चीज को अपने देश से धक्के मार कर बाहर निकाल देना चाहिए। अंतर्मन में कुछ ऐसी भी चाहतें हैं, जिन्हें सार्वजनिक कर दें तो जूते पड़ने लगेंगे। हमारे एक मित्र ने एक महिला को सिर्फ 'आइ लव यू' कहा था। एक वह दिन था और एक आज का दिन है, अस्पताल से लौटकर आया है और प्रत्येक महिला को बुआ-दीदी से नीचे नहीं बोलता है।

इंसान कामनाओं का कोष है। मनुष्य की इच्छाएं अनंत हैं। सबको फेसबुक-एक्स आदि के दरिया में डालकर अपनी भड़ास निकालने से अच्छा है कि भाग्यवादी बन जाओ। 'जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिए।' हम भी रह ही रहे हैं। घोर महंगाई की चपत खाकर भी हंस रहे हैं। यूं किसी के चाहने या न चाहने से क्या होता है? भला मैं भी कहां चाहता था, फिर भी आज महंगाई से मेरी मुलाकात हो ही गई। वैसे यह कोई नई बात नहीं है। पहले कभी-कभार भेंट होती थी। इन दिनों वह मुझसे रोज ही किसी-न-किसी बहाने मेरे घर पर मिलने आ जाया करती है। जब मैं घर से बाहर रहता हूं तो वह वहां पर भी मुझसे टकरा जाती है। बाजार जाऊं तो वहां भी मिल जाती है। सड़क पर चल रहा होता हूं, तब भी वह हमारा पीछा नहीं छोड़ती है। पत्नी कहती है, 'यह मुई मेरी सौत है। इसकी निगाह तुम्हारे शरीर के साथ तुम्हारी जेब पर भी रहती है।'

मैं अकसर यह महसूस करता हूं कि मेरी जेब में रखा हुआ पर्स भी जरूरत से ज्यादा दुबला हो चुका है। महंगाई डायन के प्रकोप के चलते 'चंद क्वॉइन' ही शेष बचे हुए हैं। गनीमत है कि वह पूरी तरह खाली नहीं हुआ है। शायद इसी दुबले पर्स पर महंगाई डाका डालने पर उतारू है। जिसके पास धन नहीं है, उसको न चोरी का डर सताता है और न रहजनी का। उसे एकमात्र डर सताता है तो महंगाई का।

मेरा प्रतिदिन महंगाई से इसी तरह मिलना होता रहा तो एक दिन इस गरीब की जान ही निकल जाएगी। आप जानते हैं कि गरीब की जान उसकी हलक में अटकी होती है। यह उस चिड़िया की तरह होती है, जिसे जब तक दाना-पानी मिलता रहता है, चहकती रहती है, जिस दिन मिलना बंद हो गया, फुर्र से उड़ जाती है। लोग यूं ही प्राण को पखेरू नहीं कहते हैं।

मैं इस नामाकूल महंगाई से कितना भी बचना चाहता हूं, लेकिन वह है कि हाथ धोकर मेरे गले पड़ती जा रही है। आज महंगाई फिर एक बार मुझसे मिलने आई है। वह आवश्यकता से अधिक मोटी दिख रही है। पिछली बार जब उससे मिलना हुआ था, तब भी वह मोटी ही थी, लेकिन इस बार उसके शरीर की चर्बी पर एक और परत चढ़ चुकी है। वैसे भी जो प्रतिदिन दूसरों की जेब पर डाका डालता हो, उसका मोटा हो जाना अचरज की बात नहीं है। मैं अपने आस-पास के ऐसे तमाम लोगों को जानता हूं, जो दूसरों को लूटते रहते हैं और मोटे हो जाते हैं। महंगाई भी पुष्ट हो रही है। वह मुझसे कहने लग गई, 'तुम मेरे नाम का रोना रोते रहते हो, मैंने सोचा आज एक बार और मिल लेती हूं! कहो, कैसे मिजाज हैं?' मैंने कहा, 'मिजाज की छोड़ो। तुमने हमें कहीं का नहीं छोड़ा है। तुम जिस अनुपात में मोटी होती चली जा रही हो, हम उसी अनुपात में दुबले हो रहे हैं। उधर तुम्हारी खुराक बढ़ती जा रही है, इधर हम अपने को किसी दिहाड़ी मजदूर की पगार जैसा बेबस पाते हैं।'

महंगाई जैसे आज विश्व हास्य दिवस मनाने के मूड में थी। वह पहले खूब हंसी, फिर मुझे छेड़ती हुई बोली, 'देख रही हूं। तुम्हारे पांवों में बेबसी के घुंघरू बंधे हुए है, फिर भी तुम ठुमक रहे हो। तुम जैसे बकरे को कहां पता है कि कल मैं तुमको किस भारी-भरकम रूप में मिलने वाली हूं!' *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

विडंबनाओं पर कटाक्ष

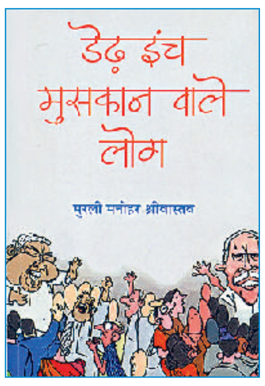

आज के बहुरूपिए समय में तमाम तरह की विडंबनाओं और विसंगतियों के संग जीने के लिए हम सब इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि किसी भी प्रकार के विद्रूप में असहज महसूस नहीं करते हैं। लेकिन एक व्यंग्यकार की सजग दृष्टि न केवल जीवन और व्यवस्था में धंसे विद्रूप को इंगित करती है, उस पर कटाक्ष भी करती है। सुपरिचित व्यंग्यकार मुरली मनोहर श्रीवास्तव के ऐसे ही चुने हुए 65 व्यंग्यों का संग्रह 'डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग' हाल में छपकर आया है। इनमें कहीं वे नेशनल कैरेक्टर से लेकर, आटा से ज्यादा डाटा की चिंता करते नजर आते हैं, तो कहीं चुटकी लेते हुए मीडिया का महिमा मंडन करते दिखते हैं। 'ऑफिस रस' शीर्षक व्यंग्य में वह लिखते हैं, 'जिसे एक बार ऑफिस रस की लत लग गई, वह इसकी प्रॉपर डोज के बिना रह ही नहीं पाता। वह कहीं भी रहे, किसी भी हाल में पड़ा हो, इस रस की प्राप्ति के लिए छटपटाता रहता है।' हर खास-ओ-आम की जिंदगी में आज की तारीख में इंटरनेट डाटा का क्या महत्व हो चुका है, इस बारे में व्यंग्यकार की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है। 'आटा और डाटा' शीर्षक व्यंग्य में वह कहते हैं, 'कई बार लगता है कि आटा न भी मिले तो चलेगा पर डाटा खत्म हो गया तो जीकर क्या करेंगे? लड़ाई यह है कि आटा जन-जन तक पहुंचा कि डाटा?' *

पुस्तक: डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग (व्यंग्य संग्रह), **लेखक:** मुरली मनोहर श्रीवास्तव, **मूल्य:** 400 रुपए, **प्रकाशक:** विद्या विहार, नई दिल्ली

सीजनल टूरिज्म / समीर चौधरी

हर नेचर लवर टूरिस्ट, मानसून में भीगी हरी-भरी पहाड़ी वादियों को करीब से निहारना चाहता है। हालांकि आमतौर पर इस सीजन को ट्रैकिंग के लिए सुटेबल नहीं माना जाता है। लेकिन कुछ ऑफबीट-सुरक्षित हिमालयी ट्रैकिंग स्पॉट्स पर जाकर आप अपनी इस चाहत को पूरा कर सकते हैं। ऐसे ही कुछ बेमिसाल ट्रैकिंग स्पॉट्स पर एक नजर।

मानसून में करिए फुल एंज्वॉय ये हिमालयन ट्रैकिंग स्पॉट्स

मोहक नजारा दिखाए मरखा घाटी, लद्दाख

जुलाई और सितंबर के मध्य में मरखा घाटी (17,060 फीट की ऊंचाई पर स्थित) की दूधिया सफेद नदियां, सुंदर लैंडस्केप और विशाल पहाड़ों की पृष्ठभूमि में हरी-भरी वादियां मन मोह लेती हैं। यहां से कांग यत्से पहाड़ का दिलकश नजारा भी दिखता है। यह ट्रैक लेह से आरंभ होता है और फिर जब आप ऊपर की तरफ बढ़ते हैं तो हेमिस नेशनल पार्क, सुदूर गांवों और आध्यात्मिक ताचा मठ से होते हुए यह सफर यादगार बनता चला जाता है। यहां ट्रैकिंग करते हुए आपको हिमालयन ब्लू शीप, हिमालयन ग्रिफोन, स्नो लेपर्ड और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों का दीदार करने का अवसर भी मिलता है। *

अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट परांग ला ट्रैक, हिमाचल प्रदेश

परांग ला ट्रैक (18,400 फीट की ऊंचाई पर स्थित) अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट माना जाता है, क्योंकि लद्दाख व स्पीति को जोड़ने वाला इसका पथरीला, तीखी ढलान वाला रूट थोड़ा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। आप इस ट्रैक पर शुरुआत लेह के करजोक गांव से या स्पीति के चिचम/किब्बर गांव से कर सकते हैं। कठिन रास्तों के बावजूद आपको जादुई नजारे देखने को मिलेंगे। इस दौरान आप खिले हुए जंगली फूल, गहरी नीली त्सो मोरिरी झील के अलावा किआंग या तिब्बती जंगली गधों के झुंडों को भी कूदते-दौड़ते हुए देख सकते हैं। इसे विजिट करने का सबसे अच्छा समय जुलाई के मध्य से सितंबर की शुरुआत तक होता है। *

हिडन डायमंड दरमा घाटी ट्रैक, उत्तराखंड

उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में स्थित दरमा घाटी ट्रैक (14,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित) एक छुपा हुआ हीरा कहा जाता है, जो आपको आकर्षक गांवों, घने जंगलों, रोलिंग घास के मैदानों और ग्लेशियर से पोषित धाराओं से रूबरू कराता है। इन सबकी पृष्ठभूमि में होती हैं हिमालय की विशाल ऊंची चोटियां। जब मानसूनी बारिश इस लैंडस्केप को भिगो देती है, तो यह वादी हरियाली और जंगली फूलों की सुगंध से भर जाती है। रास्ते में आपको बर्फ से ढंके पहाड़ मिलेंगे। आप इस दौरान स्थानीय समुदायों की विशिष्ट संस्कृति और मेजबानी का भी आनंद ले सकते हैं। जून से सितंबर इस ट्रैक पर जाने के लिए सबसे अच्छा समय है। *

हसीन वादियों से समृद्ध पिन घाटी, हिमाचल प्रदेश

मानसून में ट्रैकिंग के लिए एक अन्य बेहतरीन ट्रैकिंग स्पॉट पिन घाटी (15,780 फीट की ऊंचाई पर स्थित) है। यहां हरे-भरे जंगलों, विशाल घास के मैदानों, पथरीले रास्तों, बर्फ से ढंके मैदानों और ठंडे रेगिस्तानों का फोटो-फ्रेंडली नजारा देखने को मिलता है। यह ट्रैकिंग मुध नामक गांव से आरंभ होती है। पूरी तरह बर्फ से ढंकी झोपड़ियों की पृष्ठभूमि में मटर और जौ के खेत और तेज हवाओं के साथ झूमते पेड़-पौधे आपका मन मोह लेंगे। इस ट्रैकिंग के दौरान आप प्राकृतिक गर्म पानी के चश्मों के लिए विख्यात खीरगंगा पर रुक सकते हैं। पिन नेशनल पार्क के साथ गेचांग, का और थंगो जैसे स्थान देखना न भूलें। यहां जाने के लिए सबसे अच्छा समय जुलाई से मध्य सितंबर तक माना जाता है। *

वन्य-जीवन से दीदार कराता तोसामैदान ट्रैक, कश्मीर

इस मौसम में ट्रैकिंग की सोच रहे हैं तो तोसामैदान ट्रैक (12,460 फीट की ऊंचाई पर स्थित) आपकी बकट लिस्ट में अवश्य होना चाहिए। कश्मीर के गुलमर्ग में स्थित यह ट्रैक विशाल पीर पंजाल रेंज, अल्पाइन घास के मैदान, शंकुधारी और चीड़ के जंगलों, चमचमाती झीलों और बर्फ से ढंके पहाड़ों से होकर गुजरता है। इस मार्ग पर ट्रैकिंग के दौरान विभिन्न हिमालयी वन्य जीवों जैसे कस्तूरी हिरण, लेपर्ड और विभिन्न प्रजातियों की मुर्गियां आदि को देखने का मौका आपको मिलेगा। यहां ट्रैकिंग करने का सबसे अच्छा समय जुलाई से सितंबर तक का होता है। *

सेल्फ इंप्रूवमेंट
नरेंद्र कुमार

किसी भी प्रोफेशन में ग्रो करने के लिए लगातार सीखना और खुद को बेहतर बनाने की क्षमता का होना जरूरी है। ऐसा तभी हो सकता है, जब आपको अपनी कमियां पता हों। कमियां पता लगाने के लिए बॉस ही नहीं कुलीग्स, सीनियर्स का फीडबैक भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

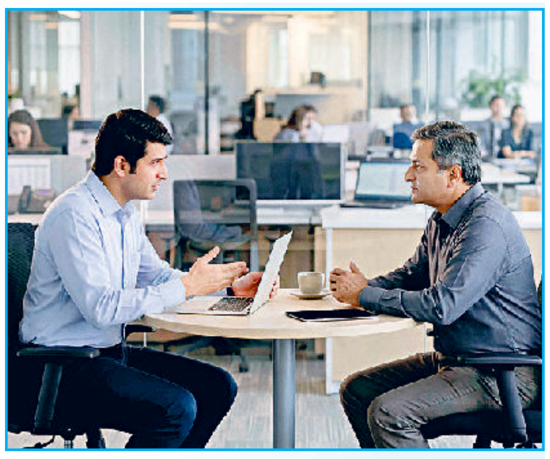

करियर ग्रोथ के लिए इंपॉर्टेंट है फीडबैक

आज के दौर में प्रोफेशनल दुनिया में कामयाबी के लिए सिर्फ मेहनत करना ही काफी नहीं है। कंपनियां अब अपने स्टाफ में ऐसे लोगों को चाहती हैं, जो हर समय सीखने को तैयार रहें। जो अपनी कमियों को पहचान सकें और किसी के द्वारा बताए जाने पर उसमें जरूरी सुधार करें। यही कारण है कि फीडबैक आज करियर ग्रोथ का एक महत्वपूर्ण जरिया बन चुका है। वास्तव में फीडबैक एक ऐसा आईना है, जिसमें हम अपनी प्रोफेशनल इमेज बहुत अच्छी तरह से देख सकते हैं। जो लोग इस आईने से डरते नहीं, वे लोग सचमुच इससे बहुत कुछ सीखते हैं।

क्या है फीडबैक: फीडबैक का मतलब केवल आपकी गलती बताया जाना नहीं होता। यह आपके प्रोफेशनल बिहेवियर, काम की प्रस्तुति और क्षमता का किया गया मूल्यांकन होता है, जिसमें सुझाव भी शामिल होता है। इसे अगर आप सकारात्मक तरीके से लेते हैं तो यह आपको बेहतर बनाने में मदद करता है और अगर आप इसे अपनी व्यक्तिगत अलोचना के तौर पर लेते हैं, तो इससे आपको नुकसान हो सकता है।

जरूरी है फीडबैक: डेढ़-दो दशक पहले नौकरियां आज के मुकाबले अपेक्षाकृत स्थिर हुआ करती थीं। लोग बीस-बीस, तीस-तीस साल तक एक ही कंपनी में गुजार देते थे। आज के समय में कंपनियां जरूरी नहीं है कि अगर किसी को अपने यहां रख लें तो उसे सालों-साल ढोती ही रहें। हां, आज भी दस पर्सेंट ऐसे कर्मचारी होते हैं, जो कई साल एक ही कंपनी में गुजार देते हैं। सवाल है, ऐसे थोड़े लोगों में क्या खूबी होती है कि आज भी कंपनियां इन थोड़े से लोगों को अपने साथ लंबे समय तक बनाए रखना चाहती हैं? दरअसल, आज कंपनियां उन्हीं कर्मचारियों को लंबे समय तक अपने साथ बनाए रखने में तरजीह देती हैं, जो अपनी प्रोफेशनल स्किल को लगातार बेहतर बनाने की कोशिश में रहते हैं और जब भी उन्हें कुछ सीखने का मौका मिलता है, जल्द से जल्द सीखने की कोशिश करते हैं। जो अपनी गलतियों में सुधार करने के लिए तैयार रहते हैं, समय और परिस्थितियों के मुताबिक काम के तौर-तरीके में जरूरी बदलाव करते हैं और टीम के साथ बेहतर तालमेल बनाए रखते हैं। वास्तव में ये क्वालिटीज फीडबैक के बेहतर उपयोग के नतीजे के रूप में सामने आती हैं।

फीडबैक बदलता है दिशा: कई बार लोगों को खुद अपनी कमजोरियों का अंदाजा नहीं हो पाता। ऐसे में अगर आप स्वयं को मिले फीडबैक के बाद अपने काम की गुणवत्ता के बारे में जरूरी समझकर, अपनी कमी को सुधारने की कोशिश करते हैं, तो यह कोशिश आपके लिए न केवल प्रमोशन बल्कि आगे चलकर टीम लीड करने की राह भी खोलेगी। यहां सीनियर्स को फीडबैक देने के तरीके के बारे में भी समझना जरूरी है। अकसर सीनियर्स गलत तरीके से या गुस्से में फीडबैक देते हैं। मसलन, किसी के काम में उन्हें कोई कमी नजर आती है, तो वह छूटते ही कह देते हैं, 'तुम हमेशा ही गलत काम करते हो।' इससे आपका कुलीग असहज हो जाता है। होना यह चाहिए कि किसी कुलीग या जूनियर को फीडबैक दें तो उसमें केवल कमी निकालने की बजाय उसके काम को और बेहतर बनाने के सुझाव पर फोकस होना चाहिए।

फीडबैक लेने का सही तरीका: फीडबैक देने के सही तरीके की तरह ही इसे लेने का तरीका भी सही होना चाहिए। सही तरीका यह है कि हम अपने काम में खामी निकालने वाले व्यक्ति की बात को ध्यान से सुनें, उसे बीच में कतई न टोकें। आप अपने लिए दिए गए महत्वपूर्ण सुझाव को लिख लें, ताकि बाद में जब अकेले में हों, तो उसे और बेहतर तरीके से समझ सकें। कोई भी फीडबैक मिलने पर आप सवाल पूछ सकते हैं, लेकिन यह सवाल रिएक्शन या ऑब्जेक्शन न लगे बल्कि आपको दी जा रही सलाह को और स्पष्ट किए जाने के संबंध में होना चाहिए या फिर बेहतर करने की इच्छा से संबंधित होना चाहिए। *

पुराने दौर से लेकर आज के समय में भी दुनिया भर के देशों में जन्मदिन के उत्सव को अलग-अलग तरीके से मनाया जाता रहा है। कुछ जगहों की परंपराएं तो बहुत ही अजब-अनोखी हैं। इनमें से कुछ दिलचस्प परंपराओं के बारे में यहां बता रहे हैं।

बर्थ-डे सेलिब्रेशन के अजब-अनोखे तरीके

बच्चों का 'किंडरफेस्ट' सेलिब्रेशन, जर्मनी

जन्मदिन पर 'पिन्याटा' फोड़ने की प्रथा, मैक्सिको

रोचक
नेहा जैन

बर्थ-डे का नाम सुनते ही सबसे पहले आपकी कल्पना में चारों तरफ सजे हुए रंग-बिरंगे गुब्बारे और मेज पर रखा सजा हुआ केक आता होगा। केक काटना आज जन्मदिन के उत्सव का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। लेकिन केक के आविष्कार के पूर्व या उसके बाद भी दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में लोग किस तरह बर्थ-डे सेलिब्रेट करते थे, यह जानना बहुत दिलचस्प है।

प्राचीन यूनान (ग्रीस): प्राचीन काल में यूनान देश के लोग जन्मदिन के अवसर पर चंद्रमा की देवी आर्टेमिस के सम्मान में गोल आकार का शहद वाला केक बनाते थे, जो चांद का प्रतीक माना जाता था। केक पर जलती मोमबत्तियां चांद की चांदनी की तरह चमकती थीं। उनका मानना था कि मोमबत्तियों का धुआं उनकी प्रार्थनाओं को देवताओं तक पहुंचाता है।

रोमन सभ्यता: प्राचीन रोम में भी जन्मदिन के अवसर पर आटे, मेवों और शहद से बने केक या मीठी ब्रेड खिलाने का चलन था।

प्राचीन मिस्र (इजिप्ट): प्राचीन मिस्र के फराओ (राजाओं) के राज्याभिषेक के दिन को उनका 'जन्मदिन' माना जाता था, जिसे भव्य उत्सव के रूप में मनाते थे। इस अवसर पर विशेष तरह के कई पकवान बनाए जाते थे।

जर्मनी का किंडरफेस्ट: 18वीं शताब्दी में जर्मनी में बच्चों के जन्मदिन पर विशेष उत्सव मनाया जाता था, जिसे 'किंडरफेस्ट' कहा जाता था। यहां बच्चे की उम्र के अनुसार केक पर मोमबत्तियां लगाई जाती थीं और एक अतिरिक्त मोमबत्ती गुड लक के लिए रखी जाती थी।

ऐसे भी करते हैं बर्थ-डे सेलिब्रेट: आज भी दुनिया के अलग-अलग देशों में जन्मदिन को अनूठे तरीकों से मनाते हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां बता रहे हैं।

चीन: चीन में बच्चे के बर्थ-डे पर केक की जगह लंबी उम्र के प्रतीक के रूप में 'लॉन्जिविटी नूडल्स' खाए जाते हैं। मान्यता है कि नूडल्स जितने लंबे होंगे, उम्र उतनी ही लंबी होगी। हालांकि अब वहां केक के साथ भी बर्थ-डे सेलिब्रेशन लोकप्रिय है।

ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड: इन दोनों देशों में बर्थ-डे के अवसर पर फलों और क्रीम से सजी 'पावलोवा' केक बनाया और खाया जाता है।

जापान: यहां 3, 5 और 7 साल का होने पर बच्चों का जन्मदिन विशेष उत्सव के रूप में मनाते हैं, जहां वे पारंपरिक किमोनो पहनकर मंदिर जाते हैं। यह परंपरा शिकी-गो-सान कहलाती है।

मैक्सिको: यहां जन्मदिन की पार्टियों में 'पिन्याटा' फोड़ने का रिवाज है। यह कागज से बना बड़ा-सा खिलौना या गुब्बारा होता है। इसे कैंडी और छोटे-छोटे खिलौनों से भरा जाता है, फिर ऊंचाई पर लटका दिया जाता है। फोड़ने पर इससे निकलने वाले उपहारों को बच्चे बड़े उत्साह से लूटते हैं।

दक्षिण कोरिया: यहां जन्मदिन की सुबह 'मियेओक-गुक' (सीवीड सूप) पीना अनिवार्य माना जाता है। यह मां के प्रति सम्मान जताने का तरीका है, क्योंकि प्रसव के बाद मांएं इसे खाती हैं।

डेनमार्क: डेनमार्क में यदि किसी के घर के बाहर राष्ट्रीय ध्वज लहरा रहा हो तो इसका मतलब है कि घर में किसी का जन्मदिन है।

कनाडा: कनाडा में कुछ जगहों पर बर्थ-डे पर उस व्यक्ति की 'नोज ग्रीसिंग' की परंपरा है। माना जाता है कि नाक पर मक्खन लगाने से आने वाले साल में उसकी मुसीबतें फिसल कर दूर चली जाएंगी। कनाडा और अमेरिका में लड़कियों के 16वें जन्मदिन को बड़े उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसे स्वीट सिक्सटीन फेस्टिवल के रूप में मनाते हैं।

लैटिन अमेरिका: लैटिन अमेरिकी देशों में लड़कियों के 15वें जन्मदिन को विशेष धूमधाम से मनाया जाता है, जो उनके बचपन से वयस्कता की ओर बढ़ने का प्रतीक होता है। *

भारत में बर्थ-डे सेलिब्रेशन

अपने देश भारत में जन्मदिन पर मंदिर जाने, अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेने और नए कपड़े पहनने आदि का रिवाज है। हालांकि महानगरों में आजकल बर्थ-डे पर केक काटना पॉपुलर हो गया है। लेकिन भारत में पारंपरिक रूप से इस अवसर पर खीर, मिठाई या हलवा खिलाया जाता है।

अनूठे बर्थ-डे केक्स

बर्थ-डे केक से जुड़ी कुछ बातें बहुत ही इंट्रेस्टिंग हैं।

भारत का सबसे भारी बर्थ-डे केक: भारत का सबसे भारी और लंबा बर्थडे केक 5.7 टन का था। यह विशाल केक जनवरी 2020 में भारतीय अभिनेता 'रॉकिंग स्टार यश' के जन्मदिन के अवसर पर बेंगलुरु, कर्नाटक में बनाया गया था। इसे बनाने में 22,500 अंडे, 1,800 किलोग्राम मैदा और 1,150 किलोग्राम चीनी का इस्तेमाल किया गया था। इस केक को 'श्री राम भवन स्वीट्स एंड बेकरी' के 20 कारीगरों ने 96 घंटों में तैयार किया था।

दुनिया का सबसे महंगा केक: दुनिया का सबसे महंगा केक ब्रिटिश डिजाइनर डेबी विंघम द्वारा वर्ष 2015 में बनाया गया था, जिसकी कीमत लगभग 75 मिलियन डॉलर (करीब 625 करोड़ रुपए) थी। यह केक एक फैशन रनवे की थीम पर आधारित था, जिसमें 4,000 से अधिक असली हीरे और कीमती रत्न जड़े गए थे।

दुनिया का सबसे बड़ा बर्थ-डे केक: यह रिकॉर्ड सन् 1990 में अमेरिका के अलबामा राज्य के फोर्ट पायने शहर के 100वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में बने केक के नाम है।

सिने-ट्रेंड
गौरव द्विवेदी

लेखकों की मेज से उपजा हिंदी सिनेमा का स्वर्णयुग

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल सितारों का नहीं, बल्कि लेखकों का भी स्वर्णिम समय था। साहित्य से निकली कहानियों और सशक्त पटकथाओं ने उस दौर की फिल्मों को कालजयी बनाया। आज जब बॉलीवुड सशक्त कहानी की कमी से जूझ रहा है, ऐसे में उसे फिर से साहित्य की ओर लौटने की दरकार है।

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल महान अभिनेताओं का दौर नहीं था, बल्कि महान लेखकों का भी दौर था। 1950, 60 और 70 के दशक में बॉलीवुड की सबसे बड़ी ताकत उसके लेखक हुआ करते थे। उस दौरान फिल्मों की नींव प्रायः साहित्य पर रखी जाती थी और पटकथा लेखक फिल्म निर्माण की प्रक्रिया के केंद्र में हुआ करते थे। यही कारण है कि उस दौर की अनेक फिल्में आज भी प्रासंगिक लगती हैं, जबकि तकनीकी रूप से कहीं अधिक उन्नत आज की कई फिल्में कुछ वर्षों में ही भुला दी जाती हैं।

साहित्य-सिनेमा चलते थे साथ-साथ: हिंदी फिल्मों के उस स्वर्ण युग के पीछे प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन और भारतीय साहित्यिक परंपरा का गहरा प्रभाव था। उर्दू और हिंदी साहित्य से जुड़े अनेक लेखक फिल्म उद्योग में आए। इनमें साहिर लुधियानवी, कैफी आजमी, ख्वाजा अहमद अब्बास, राजेंद्र सिंह बेदी, इस्मत चुगताई, कृशन चंदर, अली सरदार जाफरी, राही मासूम रजा, गुलशन नंदा, कमलेश्वर, मनोहर श्याम जोशी और शैलेंद्र के नाम प्रमुख थे। इन लेखकों ने फिल्मों को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहने दिया, बल्कि समाज, राजनीति और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त दस्तावेज बना दिया।

साहित्य का विस्तार होती थीं फिल्मी पटकथा: उस दौर में पटकथा लेखन सिर्फ घटनाओं का क्रम नहीं था, बल्कि साहित्य का स्वाभाविक विस्तार हुआ करता था। ख्वाजा अहमद अब्बास ने 'आवारा', 'श्री 420', 'जागते रहो' और 'बॉबी' जैसी फिल्मों में सामाजिक यथार्थ को स्वर दिया। राजेंद्र सिंह बेदी ने 'देवदास', 'मधुमती' और 'अनुपमा' जैसी फिल्मों की पटकथाओं में साहित्यिक गहराई जोड़ी। राही मासूम रजा ने 'मैं तुलसी तेरे आंगन की', 'गोलमाल' और बाद में 'महाभारत' (सीरियल) से अपनी पहचान बनाई।

साहित्य से निकली कालजयी फिल्में: यह वह दौर था, जब फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी पर 'तीसरी कसम' बनी, आर. के. नारायण के उपन्यास पर 'गाइड' बनी, बिमल मित्र के उपन्यास पर 'साहिब बीवी और गुलाम' बनी। मन्नू भंडारी, अमृता प्रीतम, धर्मवीर भारती और प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों की रचनाएं भी फिल्मकारों को प्रेरित करती थीं। सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक और मृणाल सेन जैसे फिल्मकारों का प्रभाव भी हिंदी सिनेमा के गंभीर रचनाकारों पर दिखाई देता था।

पटकथा लेखन के स्टार सलीम-जावेद: 1970 के दशक में पटकथा लेखन को नई ऊंचाई सलीम-जावेद की जोड़ी ने दी। 'जंजीर', 'दीवार', 'शोले', 'त्रिशूल', 'डॉन' और 'शक्ति' जैसी फिल्मों ने साबित किया कि मजबूत कहानी और दमदार संवाद किसी भी फिल्म की सबसे बड़ी पूंजी होते हैं। यह संयोग नहीं है कि इन फिल्मों के संवाद आज भी लोगों की यादों में बसे हुए हैं।

बदलने लगीं प्राथमिकताएं: 1980 के दशक में हिंदी सिनेमा की दिशा बदलने लगी। वीडियो कैसेट संस्कृति, टेलीविजन का विस्तार और तेजी से बढ़ते व्यावसायिक दबावों के बीच कहानी की जगह फॉर्मूले ने लेनी शुरू कर दी। 'डिस्को डांसर' और 'हिम्मतवाला' जैसी फिल्मों की व्यावसायिक सफलता ने निर्माताओं को यह विश्वास दिलाया कि संगीत, सितारे और मनोरंजक मसाले, सशक्त कहानी की कमी पूरी कर सकते हैं।

नहीं है कहानियों की कोई कमी: वास्तव में बॉलीवुड की समस्या प्रतिभा की कमी नहीं, बल्कि साहित्य और समाज से दूरी है। हिंदी पट्टी में प्रेमचंद, रेणु, श्रीलाल शुक्ल, अमरकांत, काशीनाथ सिंह, उदय प्रकाश, चित्रा मुद्गल, गीतांजलि श्री, संजीव और नीलोत्पल मृणाल जैसे लेखकों का विशाल संसार मौजूद है। लोककथाओं, इतिहास, ग्रामीण भारत, छोटे शहरों, सामाजिक बदलावों और समकालीन भारत के असंख्य अनुभवों से भरी कहानियां आज भी लिखी जा रही हैं। जरूरत केवल उन्हें पर्दे पर लाने की इच्छा की है।

फिर से देना होगा कहानियों को महत्व: यदि बॉलीवुड को अपनी खोई हुई रचनात्मक ऊर्जा वापस हासिल करनी है तो उसे फिर से लेखकों की महत्ता को स्वीकारना होगा। आखिरकार 'मदर इंडिया', 'दो बीघा जमीन', 'गाइड', 'आनंद' जैसी फिल्मों को कैमरों ने नहीं, कहानियों ने अमर बनाया था। सिनेमा का भविष्य भी वहीं से निकलेगा जहां उसका स्वर्णिम अतीत जन्मा था यानी लेखकों की मेज से। *

(लेखक फिल्म नीति के जानकार हैं)

दक्षिण भारतीय फिल्मों में बरकरार कहानी का महत्व

दक्षिण भारतीय फिल्म उद्योगों ने कहानी की परंपरा को बनाए रखा। मलयालम सिनेमा में एम. टी. वासुदेवन नायर, पद्मराजन, लोहितदास और हाल के वर्षों में दिलीश पोथन तथा श्याम पुष्करण जैसे लेखकों-निर्देशकों ने साहित्य और समाज से जुड़ी कहानियों को जीवित रखा। तमिल सिनेमा में जयकांतन, सुजाता और बाद में वेट्रिमारन जैसे फिल्मकारों ने यथार्थवादी कथाओं की परंपरा को आगे बढ़ाया। इसी का परिणाम है कि 'दृश्यम', 'प्रेमम', 'कुंबलंगी नाइट्स', 'महाराजा', 'असुरन', 'जय भीम', '96', 'कांतारा', 'चार्ली 777' और 'पुष्पा' जैसी फिल्में अपनी स्थानीय संस्कृति में रची-बसी होने के बावजूद राष्ट्रीय और वैश्विक दर्शकों तक पहुंचती हैं। ये फिल्में दर्शाती हैं कि स्थानीयता ही वैश्विकता का रास्ता बन सकती है